॥ श्रीः ॥

बालसंस्कृतबोधिनी ।

(नवीनसंस्कृतजिज्ञासुजनोपकारिणी.)



खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस—बंबई.

श्रावण शके १८२५, संवत् १९६०.

श्रीः ।

बालसंस्कृतबोधिनी ।

(नवीनसंस्कृतजिज्ञासुजनोपकारिणी.)

खानदेशीयरावेरग्रामनिवासिपरशुरामभट्टतनयेन

गोविन्दशास्त्रिणा निर्मिता ।

तस्या इयं

तृतीयावृत्तिः

खेमराज श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना

मुम्बय्यां

स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम) मुद्रणयन्त्रालये

मुद्रयित्वा प्रकाशिता ।

श्रावण शके १८२५, संवत् १९६०.

प्रस्तावना.

आजकल संस्कृतभाषाका प्रचार प्रायः इस पवित्र भारतवर्षमें सर्वत्र हुआहै यह प्रवृत्ति बहुत सराहने लायक है. अपने हिंदुबालकोंको मातृभाषा सीखकर उसको उन्नतीमें लाना यह महान् भूषणहै इतनाही तो क्या; बरन् इस भाषामें अपने शास्त्रग्रंथ हैं; जिनके आधारसे अपना धर्म दृढ चलताहै उन शास्त्रग्रंथोंको बाँचिनेसे और समझनेसे जो कुछ फल निकलताहै; इससे तो इस भारतभूमिमें शुद्धवंशमें लियाहुआ जन्मही सार्थक होताहै. यह कितना बड़ा फल है; यह तो आप स्वयंही विचार करलो. ऐसे महत्कार्यको सिद्धकरना चाहे तो प्रथम संस्कृतभाषा सीखे इस बातमें तो कुछ संशय और विवादही नहीं.

संस्कृतभाषा सीखनेके उपाय तो विद्वानोंने अनेक २ कर रक्खेहैं. जिनके द्वारा असंख्यमनुष्य संस्कृतभाषामें प्रवीण हुएहैं. परन्तु जिनको संस्कृतका गंधमात्रभी नहीं उन लोगोंको तो चाहे वह सुलभ ग्रंथ क्यों नहो, वहभी कठिनही लगताहै; जिससे वे लोग उत्साहसे रहित होकर अभ्यासमें प्रयत्न करना छोडदेतेहैं. इसलिये इन नवीन संस्कृतजिज्ञासु लोगोंको संस्कृतभाषा सीखनेका उत्साह जिससे बढे ऐसा कोई ग्रंथ बनाना आवश्यक है.

इसी हेतुसे श्रेष्ठिवर्य श्रीकृष्णदासात्मज खेमराजसेठजीने मुझको ऐसा उपयोगी ग्रंथ बनानेकी प्रेरणा करी. तब मैंने अल्पबुद्धिके अनुसार यह "बालसंस्कृतबोधिनी" नामक ग्रंथ बनायाहै.—इस ग्रंथमें बालकोंको या कोईभी नवीन संस्कृत सीखनेवालोंको सुगम पडे ऐसे नि-

यम लिखकर संक्षेपसे सुगमरीति कीहै. तिस्के पीछे विभक्त्यर्थ, सामान्य सर्वोपयोगी ऐसे २ धातुओंके अर्थसहित रूप लिखेहैं. फिर उपदेश बांधकर संस्कृतवाक्य और सामनेकी पंक्तिमें उसीका प्राकृतवाक्य ऐसे व्यवस्थापूर्वक पाठ लिखेहैं. उस उस पाठके नीचे उसी पाठमें जो पहलेकी अपेक्षासे नवीन शब्द आयाहो, उस उस शब्दका अर्थसहित कोश लिखाहै.

इस ग्रंथके यत्नपूर्वक पढनेसे और वाक्य पाठ करनेसे सहजहीमें बहुतसे संस्कृत शब्दोंका ज्ञान होगा. शब्दकोश मुखपाठ आनेसे तो बहुत कार्य होगा; कि जिस्से विभक्तिको और वचनोंको बदलकर चाहिये वैसे वाक्य करनेको आजायँ. कितनेक शब्द और क्रिया. पदोंके रूप ऐसे क्रमसे धरदियेहैं कि, बस उतना जोडके बोलनेसेही झट वाक्य होजाताहै. इस्को एकबार मात्र कोई अच्छे शिक्षकके पास पढले तो यह बहुतही उपयोगी होगा.

ऐसा यह " बालसंस्कृतबोधिनी " नामक पुस्तक मैंने तैयार करके पुस्तकप्रसारणैकनिपुण सेठजी **खेमराज श्रीकृष्णदासजीको** अत्यंत उत्साहपूर्वक समर्पण किया. उन्होंने निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखानेमें छापके प्रसिद्ध किया. इसलिये मैं संतोषपूर्वक उनको धन्यवाद देताहूं और समस्त विद्वज्जनों और विशेष करिकै संस्कृतशिक्षकजनों तथा संस्कृत विद्यार्थिजनोंको प्रांजल हो प्रार्थना करताहूं कि—

'संतः संतु मम प्रसन्नमनसो वाचां विचारोद्यताः

सूतेऽम्भः कमलानि तत्परिमलं वाता वितन्वंति यत्' सूक्तिरत्नावली.

शके १८१५ } **गोविन्द परशुरामशास्त्री रावेरकर.**

I went through "Bal Sanskrit Bodhini" composed by Govind Shastri Raverkar with great pleasure. The arrangement of the lessons and vocabulary of words given in each lesson is very good. I think this will be useful to beginners.

10-6-93 } CHIMANLAL SANKALCHAND MARFATIA
Bombay. }

खानदेशीयरावेरग्रामनिवासि–परशुरामभट्टतनयगोविंदशास्त्रिभिःप्रणीतं "बालसंस्कृतबोधिनी" समाख्यं पुस्तकमतीव बालानामुपकारकम्। एतदध्ययनेन गीर्वाणभाषायां झटिति प्रवेशः सम्यक्तया भवेदिति मे निश्चयः।

ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां भौमे। } प्रभाकरशास्त्री गाडगीळ–कल्याण.
शके १८१५ }

I have gone cursorily over this small book, "Bal Sanskrit Bodhini" composed by Govind Shastri Raverkar taking much trouble & spending a great deal of time. The arrangement of lessons & vocabulary of words with meaning is most admirable. This Book, I believe, will be very useful to almost all classes of beginners.

13-6-93 } HIRACHAND SAKALCHAND DOSHI.
Sholapur. }

ये "बालसंस्कृतबोधिनी" नामक ग्रन्थ बालविद्यार्थियोंको बहुत उपयोगी होगा.

ता० १२।६।९३ } शा० खुशालदास मगनलाल.
मुंबई. }

श्रीः ।

अथ बालसंस्कृतबोधिनी प्रारभ्यते ।

श्रीलक्ष्मीनरसिंहाभ्यां नमोवाणीं सहस्रशः ।
उदीर्य कुर्वे गोविन्दो बालसंस्कृतबोधिनीम् ॥ १ ॥

सामान्य शिक्षा.

१ अ इ उ ऋ ऌ ए ऐ ओ औ इन नव वर्णोंको मूल स्वर कहते हैं.

अ ह विसर्ग (:) क ख ग घ ङ—कवर्ग—कंठस्थान.

इ य श च छ ज झ ञ—चवर्ग—तालुस्थान.

ऋ र ष ट ठ ड ढ ण—टवर्ग—मूर्धास्थान.

ऌ ल स त थ द ध न—तवर्ग—दन्तस्थान.

उ उपध्मानीय (ᳵ प ᳵ फ) प फ ब भ म—पवर्ग—ओष्ठस्थान.

व—दंतोष्ठ.

ङ ञ ण न म—अनुस्वार (ं)—नासिकास्थान.

जिह्वामूलीय (ᳵ क ᳵ ख)—जिह्वामूलस्थान.

२ प्रयत्न दो हैं आभ्यंतर और बाह्य.

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न
प फ ब भ म—स्पर्श.—स्पृष्ट.

य र ल व—अंतस्थ—ईषत्स्पृष्ट.

श ष स ह—ऊष्म ईषद्विवृत.

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ—विवृत.

अ— संवृत.

इन वर्णोंमें जिस वर्णका स्थान (१ ले नियममें कहा हुआ) और ये प्रयत्न एक मिलतेहों; वे वर्ण परस्परके सवर्ण कहलाते हैं.

३ संस्कृतभाषा सीखनेकी इच्छा करनेवालोंको सबसे पहले "शब्दरूपावली" और "धातुरूपावली" ये दोनों छोटेसे ग्रन्थ अवश्यही पढ़ना चाहिये.

४ वे दोनों ग्रन्थ पढ़कर उनमें जितने शब्द, और धातुओं (क्रियापदों) के रूप चलाकर दिखाये हैं; उसी नियमानुसार अनेकानेक शब्द, और धातुओंके रूप चलानेका दृढ़ अभ्यास रक्खे.

५ पाठक लोगोंकूं इतनी बात अवश्य करना चाहिये कि, विद्यार्थियोंकूं वे दोनों ग्रन्थ शुद्धतापूर्वक ह्रस्व, दीर्घ, विसर्ग, अनुस्वार जहां के तहां लगाकर पढ़ावें, और उनमें जो शब्द कहे हैं, उनके अंतवर्ण, लिङ्ग, विभक्ति और वचन समझावें. और उस उस शब्दसरीखे और और शब्द पूछे. तथा वे उसके मुखसे चलावे, बीच बीचमें विभक्ति और वचन पूछताजावे, ऐसे धातुओंके अर्थ, काल, पुरुष, और वचन समझावे. और बीच बीचमें पूछे, उसीके सरीखे दूसरे धातुओंके रूप चलानेको कहे और कर्त्ता, प्रयोजककर्त्ता, कर्म, भाव धात्वर्थ इत्यादिक अच्छी रीतिसे समझा देवे.

विशेष शिक्षा ।

६ संस्कृतमें सात विभक्तियाँ हैं, प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी.—संबोधन और प्रथमा एकही है.

७ ये सात विभक्तियाँ कर्त्ता आदिक अर्थमें होती हैं. जैसा—

कर्त्ता—	प्रथमा, तृतीया, षष्ठी.	संप्रदान—	चतुर्थी.
कर्म—	द्वितीया, षष्ठी.	अपादान—	पंचमी.
करण—	तृतीया.	संबंध—	षष्ठी.
		अधिकरण—	सप्तमी.

सामान्य शब्दोंसे विभक्तियोंके अर्थ.

विभ०	एकवचन.	द्विवचन.	बहुवचन.
प्रथमा-	वह, वो, सो.	वे दोना.	वे, ते.
द्विती०	उसको, तिसको, ताको, उसे.	उन दोनोंको, तिन दोनोंको.	उनको, तिनको.
तृतीया	उसकरिके.	उनदोनों करिके.	उन करिके.
चतुर्थी-	उसके लिये,	उनदोनोंके लिये, उनदोनोंके वास्ते, उनदोनोंके अर्थ.	उनके लिये, उनके वास्ते, उनके अर्थ.
पंचमी -	उससे.	उन दोनोंसे.	उनसे.
षष्ठी-	उसका उसकी.	उन दोनोंका, उन दोनोंकी.	उनका उनकी.
सप्तमी-	उसमें, उसके विषे.	उन दोनोंमें, उन दोनोंके विषे.	उनमें, उनके विषे.
संबो०-	हे, अयि, अगा, रे, भो, अये.	अहो, हो, ओ.	अहा, भो, हो, ओ.

१ हिंदीभाषामें पुँल्लिङ्ग और नपुंसकलिंग शब्दोंका अर्थ एक सरीखाही होताहै

ये विभक्तियां जिस जिस शब्दसे कीजायँ, उस उस शब्दके अर्थ ऐसे करते जायँ. जैसा—रामः—राम जो है सो (प्रथमा) रामं-राम जो है उसको (द्वि०) **रामेण**—राम करिकै (तृ०) **रामाय**—रामके लिये, (च०) **रामात्**—रामसे, (पं०) **रामस्य**—रामका, (ष०) **रामे**—राममें, रामके विषे. (स०) हे **राम** ! —हे राम, अयि राम, अगा राम, अरे राम रे राम, भो राम, अये राम. (सं०) इस रीतिसे द्विवचन, तथा बहुवचन जानना. और दूसरेभी सब शब्दोंका अर्थ करना. अध्यापकको उचितहै कि, इस रीतिसे पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग शब्दोंके विभक्त्यर्थ, शिष्योंको अवश्य सिखलावें, जिससे वे अनेक अनेक शब्दोंके अर्थ करते जायँ.

विशेष शब्दोंक रूप और उनके अर्थ.

	अस्मद् (मैं).	युष्मद् (तू)
प्रथमा	अहं—मैं.	त्वं—तू.
	आवां—हम दोनों.	युवां—तुम दोनों.
	वयं—हम.	यूयं—तुम.
द्विती०	मां, मा—मुझकूं, मेरेकूं.	त्वां, त्वा—तुझकं, तेरेकूं.
	आवां, नौ—हम दोनोंकूं.	युवां, वां—तुम दोनोंकूं.
	अस्मान्, नः—हमकूं.	युष्मान्, वः—तुमकूं.
तृती०	मया—मैंने, मेरे करिकै, मेरेसे.	त्वया—तैंने, तेरे करिकै, तेरेसे.
	आवाभ्यां—हम दोनोंने, हम दोनों करिकै, हम दोनोंसे.	युवाभ्याम्—तुम दोनोंने, तुम दोनों करिकै, तुम दोनोंसे.
	अस्माभिः—हमने, हम-करिकै, हमारेसे.	युष्माभिः-तुमने, तुम करिकै, तुमसे.

चतु०	मह्यं,मे—मुझकूं,मेरेकूं, मेरे अर्थ, मेरे वास्ते.	तुभ्यं,ते—तुझकूं,तेरेकूं, तेरे अर्थ, तेरेवास्ते.
	आवाभ्यां, नौ—हम दोनोंकूं, हम दोनोंके अर्थ, हम दोनोंके वास्ते.	युवाभ्याम्, वां—तुम दोनोंकूं, तुम दोनोंके अर्थ, तुम दोनोंके वास्ते.
	अस्मभ्यं,नः—हमकूं, हमारे अर्थ,हमारे वास्ते.	युष्मभ्यं,वः—तुमकूं,तुम्हारे अर्थ, तुम्हारे वास्ते.
पञ्चमी[१]	मत्—मेरेसे,मेरी अपेक्षासे, मेरे पाससे.	त्वत्—तेरेसे, तेरी अपेक्षासे, तेरे पाससे.
	आवाभ्याम्—हम दोनोंसे,हम दोनोंकी अपेक्षासे,हम दोनोंके पाससे.	युवाभ्याम्—तुम दोनोंसे, तुम दोनोंकी अपेक्षासे, तुम दोनोंके पाससे.
	अस्मत्-हमसे, हमारीअपेक्षासे. हमारे पाससे.	युष्मत्-तुमसे,तुम्हारी अपेक्षासे, तुम्हारे पाससे.
षष्ठी	मम, मे—मेरा—री—रा-, मुझकूं,मेरेकूं, मोकूं.	तव, ते—तेरा—री—रा, तुझकूं, तेरेकूं, तोकं.
	आवयोः, नौ—हम दोनोंका-की-को-का, हम दोनोंकूं.	युवयोः, वां—तुम दोनोंका- की-को—का, तुम दोनोंकूं.
	अस्माकं, नः—हमारा, री-रा-हमकूं.	युष्माकम्, वः—तुम्हारा—री रा-तुमकूं.

१ पंचमीमें 'आ' उपपद लगनेसे 'तक तलक' यहभी अर्थ होताहै.

सप्तमी.

मयि-मेरेविषे,मेरेमें.	त्वयि तेरविषे—तेरेमें
आवयोः—हम दोना- विषे,हम दोनोंमें.	युवयोः—तुम दोनोंविष,तुम दोनोंमें.
अस्मासु—हमारे विषे, हमारेमें, हममें.	युष्मासु—तुम्हारे विषे, तुम्हारेमें, तुममें.

इन शब्दोंकूं संबोधन होता नहीं.

८ संस्कृत भाषामें अव्यय शब्दोंसे विभक्ति होती नहीं.—अव्यय—तीनों लिंगोंमें, प्रथमादिक सर्व विभक्तियेंमें, और तीनोंभी वचनोंमें एकसरीखाही रहता है. रूपांतर पाताNहीं. जैसा—स्वर्, अंतर्, प्रातर्—च, वा, ह, हि, खलु, किं, एव, एवं, ननु, नूनं—इत्यादि.

९ संस्कृतभाषामें क्रियापदोंमें सर्व वाक्यकी पूर्णता होती है. क्रियापदोंके अनेक प्रयोग होते हैं. सो समझना कठिन है. इस पुस्तकमें जहां तहां क्रियापदोंके शब्दोंका अर्थ शब्दकोशमें दिये हैं. क्रियापदोंका साधारण ज्ञान धातुरूपावली पढनेसे होगा.

१० क्रियावाचक शब्दोंकूं 'धातु' ऐसा कहते हैं. तिन धातुओंसे कर्ता, कर्म और भाव (अर्थात् शुद्ध धातुका अर्थ) इन्होंमें ये नीचे लिखेहुए प्रत्यय होतेहैं—

परस्मैपदी		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	प्रथमपुरुष—	तिप्	तस्	(झि) अंति
	मध्यमपुरुष—	सिप्	थस्	थ
	उत्तमपुरुष—	मिप्	वस्	मस्

आत्मनेपदी.		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन.
	प्रथमपुरुष—	त (ते)	आताम् (आते)	झ (अंते)
	मध्यमपुरुष—	थास् (से)	आथाम् (आथे)	ध्वम् (ध्वे)
	उत्तमपुरुष—	इ (ए)	वहि (वहे)	महि (महे)

ये प्रत्यय वर्तमानकाल,भूतकाल, भविष्यकाल, आज्ञार्थ, विध्यर्थ क्रियातिपात्ति इन्होंमें कुछकुछ बदलजातेहैं. जैसा—कहां कहां इन्होंकूं भिन्नभिन्न प्रकारके आदेश होतेहैं.तिस्से इन्होंके रूप मूलरूपोंसे बदलजातेहैं, यह समझना कठिनहै. इस लिये प्रथम केवल धातुरूपावली पढके मुख्य मुख्य धातुओंके क्रियापदोंके रूप समझलेना और शिक्षकने विद्यार्थियोंको सिखाना.

११ संस्कृत वाक्योंके अंतमें क्रियापदोंका प्रयोग किया जाताहै. वे क्रियापद धातुओंके रूप हैं. व्याकरण शास्त्रमें धातुओंके अनेक तरहके रूप चलाये हैं. परंतु प्रायःकरिकै बहुतही वाक्योंमें 'कृ, भू और अस्' इन धातुओंका प्रयोग किया करतेहैं; इसवास्ते उन तीन धातुओंका अर्थसहित रूपाख्यान नीचे दियाहै. उससे समझलेना.—

कृ—धातु (परस्मैपदी सकर्मक) करना.

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	[एकवचन]	[द्वि० बहुवचन]
			लट			
वर्तमान-काल	प्रथमपुरुष	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति	(वो) करताहै.	(वे) करतेहैं.
	मध्यमपुरुष	करोषि	कुरुथः	कुरुथ	(तू) करताहै.	(तुम) करतेहो.
	उत्तमपुरुष	करोमि	कुर्वः	कुर्मः	(मैं) करताहूं.	(हम) करतेहैं.
			लिट्			
अनद्यतन परोक्ष भूतकाल	प्रथमपुरुष	चकार	चक्रतुः	चक्रुः	(वो) करताभया.	(वे) करतेभये.
	मध्यमपुरुष	चकर्थ	चक्रथुः	चक्र	(तू) "	(तुम) "
	उत्तमपुरुष	चकार, चकर	चकृव	चकृम	(मैं) "	(हम) "

१टीप—संस्कृतभाषामें द्विवचन तथा बहुवचनका प्रयोग पृथक् २ होताहै; परंतु हिंदीभाषामें द्विवचन तथा बहुवचनका अर्थ एकही होताहै.

काल	पुरुष				[ए० व०]	[द्वि० ब० व०]
			लुट्			
अनद्यतन भविष्यकाल	प्र०—	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः	(वो) करेगा.	(वे) करेंगे.
	म०—	कर्तासि	कर्तास्थः	कर्तास्थ	(तू) "	(तुम) करोगे.
	उ०—	कर्तास्मि	कर्तास्वः	कर्तास्मः	(मैं) करूंगा	(हम) करेंगे.
				लृट्		
भविष्यकाल	प्र०—	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यंति	(वो) करेगा.	(वे) करेंगे.
	म०—	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ	(तू) "	(तुम) करोगे
	उ०—	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः	(मैं) करूंगा.	(हम) करेंगे
				लोट्		
विध्यर्थ आज्ञार्थ	प्र०—	करोतु, कुरुतात्	कुरुतां	कुर्वंतु	(वो) करे.	(वे) करें.
	म०—	कुरु, कुरुतात्	कुरुतं	कुरुत	(तू) कर.	(तुम) करो.
	उ०—	करवाणि	करवाव	करवाम	(मैं) करूं.	(हम) करें.
				लङ्		
अनद्यतन भूतकाल	प्र०—	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्	(वो) करताभया.	(वे) करतेभये.
	म०—	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत	(तू) "	(तुम) "
	उ०—	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म	(म) "	(हम) "

					[ए० व०]	[द्वि० ब० व०]
			विधिलिङ्			
विध्यर्थ	प्र०—	कुर्यात्	कुर्यातां	कुर्युः	(वो) करे.	(वे) करें.
	म०—	कुर्याः	कुर्यातं	कुर्यात	(तू) कर.	(तुम) करो.
	उ०—	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम	(मैं) करूं.	(हम) करें.
			आशीर्लिङ्			
आशीरर्थ	प्र०—	क्रियात्	क्रियास्तां	क्रियासुः	(वो) करे.	(वे) करें.
	म०—	क्रियाः	क्रियास्तं	क्रियास्त	(तू) कर.	(तुम) करो.
	उ०—	क्रियासं	क्रियास्व	क्रियास्म	(मैं) करूं.	(हम) करें.
			लुङ्			
भूतकाल	प्र०—	अकार्षीत्	आकार्ष्टाम्	अकार्षुः	(वो) करताभया.	(वे) करतभये.
	म०—	अकार्षीः	अकार्ष्टम्	अकार्ष्ट	(तू) ,,	(तुम) ,,
	उ०—	अकार्षम्	अकार्ष्व	अकार्ष्म	(मैं) ,,	(हम) ,,
			लृङ्			
क्रियातिपत्ति[1]	प्र०—	अकरिष्यत्	अकरिष्यताम्	अकरिष्यन्	(वो) करेगा.	(वे) करेंगे.
	म०—	अकरिष्यः	अकरिष्यतम्	अकरिष्यत	(तू) ,,	(तुम) करोगे.
	उ०—	अकरिष्यम्	अकरिष्याव	अकरिष्याम	(मैं) करूंगा	(हम) करेंगे.

१ यह क्रियापद दूसरे क्रियापदसे साकांक्ष रहताहै. जैसा—'यदि वृष्टिरभविष्यत; तदा सुभिक्षमभविष्यत' 'जो बरसात होगी; तो सुभिक्ष होगा.'

कृ[1]—धातु (आत्मनेपदी सकर्मक) करना.

लट्

वर्तमानकाल	प्र०—	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
	म०—	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
	उ०—	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे

लिट्

अनद्यतन परोक्षभूतकाल	प्र०—	चक्रे	चक्राते	चक्रिरे
	म०—	चकृषे	चक्राथे	चकृढ्वे
	उ०—	चक्रे	चकृवहे	चकृमहे

लुट्

अनद्यतन भविष्यकाल	प्र०—	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः
	म०—	कर्तासे	कर्तासाथे	कर्ताध्वे
	उ०—	कर्ताहे	कर्तास्वहे	कर्तास्महे

---

१ इसकेभी अर्थ पूर्ववत् समझना.

लृट्

भविष्यकाल			
प्र० —	करिष्यते	करिष्येते	कीरिष्यन्ते
म० —	करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे
उ० —	करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे

लोट्

विध्यर्थ आज्ञार्थ			
प्र० —	कुरुतां	कुर्वातां	कुर्वताम्
म० —	कुरुष्व	कुर्वाथां	कुरुध्वम्
उ० —	करवै	करवावहै	करवामहै

लङ्

अनद्यतन भूतकाल			
प्र० —	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
म० —	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
उ० —	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि

लिङ्

विध्यर्थ			
प्र० —	कुर्वीत	कुर्वीयातां	कुर्वीरन्
म० —	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथां	कुर्वीध्वम्
उ० —	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि

आशीर्लिङ्

आशीरर्थ	प्र० —	कृषीष्ट	कृषीयास्तां	कृषीरन्
	म० —	कृषीष्ठाः	कृषीयास्थां	कृषीध्वम्
	उ० —	कृषीय	कृषीवहि	कृषीमहि

लुङ्

भूतकाल	प्र० —	अकृत	आकृषाताम्	अकृषत
	म० —	अकृथाः	अकृषाथाम्	अकृढ्वम्
	उ० —	अकृषि	अकृष्वहि	अकृष्महि

लृङ्

क्रियातिपत्ति	प्र० —	अकरिष्यत	अकरिष्येताम्	अकरिष्यंत
	म० —	अकरिष्यथाः	अकरिष्येथाम्	अकरिष्यध्वम्
	उ० —	अकरिष्ये	अकरिष्यावहि	अकरिष्यामहि

भू–धातु (परस्मैपदी अकर्मक) होना.

काल					
वर्तमानकाल	प्र०—भवति	भवतः	भवंति	(वो) होता है.	(वे) होतेहैं.
	म०—भवसि	भवथः	भवथ	(तू) "	(तुम) होतेहो
	उ०—भवामि	भवावः	भवामः	(मैं) होताहूं.	(हम) होतेहैं
		लिट्			
अनद्यतन परोक्षभूतकाल	प्र०—बभूव	बभूवतुः	बभूवुः	(वो) होताभया.	(वे) होतेभए.
	म०—बभूविथ	बभूवथुः	बभूव	(तू) "	(तुम) "
	उ०—बभूव	बभूविव	बभूविम	(मैं) "	(हम) "
		लुट्			
अनद्यतन भविष्यकाल	प्र०—भविता	भवितारौ	भवितारः	(वो) होगा.	(वे) होंगे.
	म०—भवितासि	भवितास्थः	भवितास्थ	(तू) "	(तुम) होवोगे
	उ०—भवितास्मि	भवितास्वः	भवितास्मः	(मैं) होऊंगा.	(हम) होवेंगे
		लृट्			
भविष्यकाल	प्र०— भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यंति	(वो) होगा.	(वे) होंगे.
	म०— भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ	(तू) "	(तुम) होवोगे
	उ०— भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः	(मैं) होऊंगा.	(हम) होवेंगे

लोट्

विध्यर्थ आज्ञार्थ	प्र०— भवतु,भवतात्	भवतां	भवंतु	(वो) होउ.	(वे) होवें.
	म०— भव,भवतात्	भवतं	भवत	(तू) हो	(तुम) होवो
	उ०— भवानि	भवाम	भवाम	(मैं) होऊं	(हम) होवें

लङ्

अनद्यतन भूतकाल	प्र०—अभवत्	अभवताम्	अभवन्	(वो) होताभया.	(वे) होतेभये.
	म०—अभवः	:अभवतम्	अभवत	(तु) "	(तुम) "
	उ०—अभवम्	अभवाव	अभवाम	(म) "	(हम) "

विधिलिङ्

विध्यर्थ	प्र०— भवेत्	भवेतां	भवेयुः	(वो) होउ.	(वे) होवे.
	म०— भवेः	भवेतं	भवेत	(तू) हो.	(तुम) होवो
	उ०— भवेयं	भवेव	भवेम	(मैं) होऊं.	(हम) होवें

आशीर्लिङ्

आशीरर्थ	प्र०—भूयात्	भूयास्तां	भूयासुः	(वो) होउ.	(वे) होवें.
	म०—भूयाः	भूयास्तं	भूयास्त	(तू) होउ.	(तुम) होवो.
	उ०—भूयासं	भूयास्व	भूयास्म	(मैं) होउँ.	(हम) होवें.

लुङ्

भूतकाल	प्र०—अभूत्	अभूताम्	अभूवन्	(वो) होताभया.	(वे) होतेभये.
	म०—अभूः	अभूतम्	अभूत	(तू) "	(तुम) "
	उ०—अभूवम्	अभूव	अभूम	(मैं) "	(हम) "

लृङ्

क्रियातिपत्ति	प्र० अभविष्यत्	अभविष्यताम्	अभविष्यन्	(वो) होगा.	(वे) होंगे.
	म० अभविष्यः	अभविष्यतम्	अभविष्यत	(तू) "	(तुम) होंगे.
	उ० अभविष्यम्	अभविष्याव	अभविष्याम	(मैं) होऊंगा.	(हम) होवेंगे

अस–धातु[1] (परस्मैपदी अकर्मक) होना.

काल	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
वर्तमानकाल	प्र०—	अस्ति	स्तः	संति
	म०—	असि	स्थः	स्थ
	उ०—	अस्मि	स्वः	स्मः
विध्यर्थ	प्र०—	अस्तु, स्तात्	स्तां	संतु
	म०—	एधि, स्तात्	स्तं	स्त
	उ०—	असानि	असाव	असाम
भूतकाल.	प्र०—	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
	म०—	आसीः	आस्तम्	आस्त
	प्र०—	आसम्	आस्व	आस्म
विध्यर्थ	प्र०—	स्यात्	स्यातां	स्युः
	म०—	स्याः	स्यातं	स्यात
	उ०—	स्यां	स्याव	स्याम

इस धातुके सब क्रियापदोंका अर्थ 'भू' धातुके क्रियापदोंके अर्थ सरीखा करना.

१ अस्, धातुके रूप लिट् लुट् आर्शार्लिङ् और लुङ् इन प्रत्ययोंमें 'भू' धातुके रूप सरीखे चलना जैसे--लिट्-बभूव इत्यादि लुट्--भविता इ० लट्--भविष्यात इ० आशीर्लिङ्--भूयात् इ० लङ् अभविष्यत् इ० पूर्ववत् जानिलेना.

११ कितनेक शब्द क्रियापदोंसे होते हैं. उनको 'कृदंतशब्द' ऐसा कहते हैं. उनका अर्थ क्रियापदोंकासा बोलना. और वे विशेषणभी होते हैं, इसवास्ते उन्होंका विशेषणका अर्थभी बोलना. परंतु उन्होंके रूप नामोंके रूपसरीखेही चलते हैं. और इन्होंके लिंग विशेष्यवाचक शब्दोंके लिंगके अनुसार होते हैं- जैसे—गन्तव्य, वक्तव्य, कर्तव्य इत्यादि. उन्होंके अर्थ—जानेयोग्य, बोलनेयोग्य, करनेयोग्य इत्यादि—इन्होंके रूप-गंतव्यं, गंतव्ये, गंतव्यानि. गंतव्यः, गंतव्यौ, गंतव्याः, गन्तव्या, गन्तव्ये. इत्यादिक शब्दरूपावलीके अनुसार समझना.

१२ कितनेक कृदंतशब्द शुद्ध धातुके अर्थमेंही रहते हैं; उन्होंके रूप नपुंसकलिंग प्रथमाके एकवचनांतही रहते हैं. जैसे—गन्तव्यम्, उत्थातव्यम् इत्यादिकशब्दोंका—जाना, उठके खडे होना इत्यादिक अर्थ, और नपुंसकलिंग प्रथमैकवचनांतकासा प्रयोग है.

१३ कितनेक शब्द, धातुओंसे उत्पन्न होते हैं. उनके लिंग नियतही रहते हैं. जैसे—पुं० वसंत, देश, स्त्री० अप्, भित्ति, न० भोजन, प्रयोजन, दर्शन, प्रमाण इत्यादिक शब्द हैं. ऐसे यह शब्द एक एक लिंगमेंही रहते हैं.

१४ कितनेक शब्द विशेषण रहते हैं. उनका प्रयोग या अर्थ बहुत करिके विशेष्यवाचकशब्दसे पहलेही कियाजाता है. परंतु कहां कहां वाक्यमें विशेष्यके पीछे विशेषणवाचकशब्द आता है, उसको विधिविशेषण कहते हैं. वहां उन विधिविशेषणोंका अर्थ विशेष्यवाचकशब्दोंके अर्थ बोलनेके पश्चात् बोलना. जैसे—"देवदत्तो ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति"—देवदत्तनामक कोई एक पुरुष गामको जाता हुआ घासको छूता है.

१५ कहां कहां षष्ठीका 'अनादर' अर्थ होता है. वहां 'संते' ऐसा उस षष्ठ्यंत शब्दके अर्थ बोलनेके पश्चात् लगाना. जैसे—"पश्यतो हरः"

देखते संते चोर और कहां कहां सप्तमीका अर्थ "संते" ऐसा लगाकर होता है, इसको, 'सतिसप्तमी' ऐसी बोलनेकी परंपरा है. जैसा—'शासति महीं राज्ञि सर्वे लोका नन्दन्ते' राजा पृथ्वीको शासन करतसंते लोक सुखी होते हैं. कहां 'सति' इस पदका साक्षात्भी प्रयोग कियाजाता है जैसे—' पथ्ये सति गदार्तस्य किमौषधनिषेवणैः ' पथ्य (करत) संत रोगीको औषध लेनेसे क्या ?

इति शिक्षोपदेशः ।

प्रथमः पाठः १.

नित्यसामान्यकृत्योपदेशः ।

संस्कृतवाक्यानि—	प्राकृतवाक्यानि—
सूर्योदयात् प्राक् उत्थातव्यम्	सूर्यके उदयमे प्रथम उठना.
पश्चात् गुर्वादीनाम् अभिवादनं कर्तव्यम्	फिर गुरु पिताआदिकोंको नमस्कार करना.
तत्समये इति वक्तव्यम्	उस समयमें ऐसा कहना.
भोः अभिवादये (अमुक) नामाहम्	अहो (अमुक) नामवाला मैं नमस्कार करताहूं.

---

१ इन वाक्योंमें जितने शब्द गये हैं. और आगेके वाक्योंमें विभक्ति लगाये, तथा शब्दकोशमें मूलरूपसे दिखाये जितने शब्द आवेंगे; वे सब अर्थसहित पाठ करें. और इन्होंके लिंग समझलेवें. फिर जब कोई वाक्य बोलनेका होवे, तब इन शब्दोंको अर्थके अनुसार विभक्ति लगाकर वाक्यरचना करतेजाँय यह वाक्यरचनाका प्रकार शिक्षकोंनें अपने विद्यार्थियोंकूं अच्छी रीतिसें समझा देना चाहिये. जिससे वे अशुद्ध प्रयोग करें नहीं. २ इस वाक्यमें (अमुक) जिस जगह हैं, वहां जो नमस्कार करनेवाला हो, उसने अपने नामका उच्चार करना. जैसे कि—"भोः अभिवादये (देवदत्त) नामाहम्"

ततः शरीरशुद्धये मलोत्सर्जनार्थं च ग्रामात् बहिःनिर्जनस्थले गन्तव्यम्	फिर शरीरकी शुद्धि और मलमूत्रके त्याग करनेके लिये गामसे बाहर जहां मनुष्य न हों वहां जाना.
तत्काले शुद्धजलं गृहीत्वा मूत्राद्युत्सर्गं कुर्यात्	उस समय शुद्धजल लेकर मूत्रादिकोंका त्यागकरे.
पश्चात् षोडशगण्डूषैः मुखशुद्धिं कुर्वीत	फिर सोलह गंडषों (कुल्लाओं) से मुखकी शुद्धि करे.
अनंतरं दन्तधावनम् आचरेत्	फिर दाँतौन करे.
तदनंतरं नद्यां स्नानं कर्तव्यम्	तिसके अनंतर नदीमें स्नान करना.
अथवा कूपजलेन स्नायात्	किंवा कूवेके पानीसे स्नानकरे.
स्नात्वा संध्याम् उपासीत	स्नानकरके संध्याकी उपासना करे.
ततो देवान् नमस्कुर्यात्	फिर देवोंको नमस्कार करे.
देवानां पूजा कर्तव्या	देवोंकी पूजा करनी.
अनंतरं भोजनं कुर्वीत	फिर भोजन करे.
मांसं न भक्षयेत्	मांसको खावे नहीं.
सुरां न पिबेत्	मद्यको पीवे नहीं.
असत्यं न वदेत्	झूँठ बोले नहीं.
स्वधर्मं न त्यजेत्	अपने धर्मको छोडे नहीं.
एष वैदिकः सनातनो धर्मः	यह वेदमें कहा हुआ धर्म सनातन कालका है.

शब्दकोश १.

सूर्योदय– [नाम] सूर्यका उदय, प्रातःकाल, सवेरा, प्रभात.
प्राक्– [अव्यय] पहले, प्रथम, आगे, आगेसे.
उत्थातव्य– [कृदंतनाम] उठना, जागना, खडेरहना.
पश्चात्– [अ०] फिर.
गुर्वादि– [ना०] बडे, माता, पिताआदिक.
अभिवादन– [ना०] नमस्कार
कर्त्तव्य– [कृ०ना०] करना
तत्समय– [ना०] उसकाल.
इति– [अ०] इसरीतिसे, ऐसा.
वक्तव्य– [कृ०ना०] बोलना.
भोः– [अ०] अहो !
अभिवादये– [क्रियापद] नमस्कार करताहूं.
ततः–[अ०] तिसके पीछे.
शरीरशुद्धि– [ना०] देहकी स्वच्छता.
मलोत्सर्जन– [ना०] मैलका छोडना.
ग्राम– [ना०] गाम
बहिः– [अ०] बाहर.
निर्जनस्थल– [ना०] जहा कोई आदमी नहीं ऐसी जगह.
गन्तव्य– [कृ०ना०] जाना.
तत्काल– [ना०] उससमय.
शुद्धजल [ना०] स्वच्छ पानी.
गृहीत्वा– [कृ० अ०] लेकर.
मूत्राद्युत्सर्ग– [ना०]मूत्रआदिकोंका छोडना.
कुर्यात् [क्रि०] करे.
गण्डूष– [ना०] कुरला, कुल्ला
मुखशुद्धि [ना०] मुखकी स्वच्छता.
कुर्वीत– [क्रि०] करे.
अनंतरम्– [अ०] पीछे.
दन्तधावन [ना०] दाँतोन.
आचरेत्– [क्रि०] करे.
तदनंतरम्–[अ०]तिसके पीछे.
कूपजल–[ना०] कूवाका पानी.
स्नायात्– [क्रि०] स्नानकरे.
स्नात्वा– [कृ०अ०] न्हायके.
संध्या– [ना०] जिसमें भगवानूका ध्यान कियाजाताहै, ऐसा कर्म.
उपासीत–[क्रि०]करे, सेवनकरे.

देव-[ना०] देवता.
नमस्कुर्यात्[क्रि०]नमस्कारकरे.
न-[अ०] नहीं.
भक्षयेत्-[क्रि०] खावे.
सुरा-[ना०] मद्य.
पिबेत्-[क्रि०] पीवे.
असत्य-[ना०] झूंठ
वदेत्-[क्रि०] बोले.
स्वधर्म-[ना०] अपने बाप दादा और अपन जो आचार पालते हैं वह.
त्यजेत्-[क्रि०] छोडे.
वैदिक-[ना०] वेदमें कहाहुआ.
सनातन-[ना०] पुरातन कालसे आयाहुवा.
धर्म-[ना०] आचार.

द्वितीयः पाठः २.

पाठशालोपदेशः ।

संस्कृतवाक्यानि-	प्राकृतवाक्यानि
प्रत्यहं पाठशालां प्रति गंतव्यम्	दररोज पाठशालामें जाना.
तत्र आदौ गुरूनभिवंद्य विद्या अध्येतव्या	तहां प्रथम गुरुको नमस्कार करके विद्या पढना.
गुरोः सकाशात् विद्याग्रहणप्रकारस्त्रिधा	गुरुके पाससे विद्या लेनेके प्रकार तीन हैं.
गुरोः शुश्रूषया	गुरुकी सेवा करिके.
वा द्रव्यदानेन	अथवा द्रव्यके देनेसे.
अथवाऽन्यया विद्यया	अथवा दूसरी विद्या गुरुको देनेसे.
शालायां गुरुसमीपे अध्ययनं दृढं भवति	शालामें गुरुके पास पढना दृढ होता है.
गृहे स्थित्वा यदध्ययनं तत् शिथिलं भवति	घरमें रहकर जो पढना है, सो शिथिल (ढीला) होता है.

अस्यां पाठशालायां बहवो विद्यार्थिन आयांति	इस पाठशालामें बहुत विद्यार्थी आते हैं.
तेषां तु केचन विद्यार्थिनो वेदस्याध्ययनं कुर्वंति	तिनमें तो कोई विद्यार्थी वेदका अध्ययन करतेहैं.
कतिपये च विद्यार्थिनः व्याकरणशास्त्रम् अधीयते	कितनेक विद्यार्थी व्याकरणशास्त्रको पढते हैं.
तथा केचन तर्कशास्त्रं पठंति	तैसे कोई विद्यार्थी तर्कशास्त्र पढते हैं.
तथा तेषां मध्ये कतिपये वेदांतशास्त्रं पठंति	तैसे तिन्होंके मध्यमें कितनेक वेदांतशास्त्रको पढते हैं.
एवं सर्वे विद्यार्थिनः शास्त्राध्ययनकर्तारः संति	इसरीतिसे सर्व विद्यार्थी शास्त्र पढनेवाले हैं.
अस्याः पाठशालायाः समीपे आंग्लपाठशालास्ति	इस पाठशालाके पास अंग्रजी स्कूल है.
तत्र विद्यार्थिनः आंग्लभौमभाषां पठंति	वहां विद्यार्थी अंग्रजी भाषा सीखते हैं.
तत्र चन्द्रशेखरो[1] विद्यार्थी पञ्चमं[2] पुस्तकं पठति	वहां चन्द्रशेखरनामक विद्यार्थी पांचवाँ पुस्तक पढता है.
एकमासेन परीक्षा भविष्यति	एक महीनेसे परीक्षा होगी.
अस्यां परीक्षायां दश विद्यार्थिनः उत्तीर्णाः	इस परीक्षामें दश विद्यार्थी पास हुए.
विद्यैवैकं धनं सर्वधनेषु श्रेष्ठम्	विद्या यही एक धन सर्व धनमें श्रेष्ठहै.
तद्यथा	वह ऐसा.
दस्युभिः न ह्रियते	चोरोंसे नहीं छीनाजाता है.

१ इस नामके जगह चाहिये सो नामभी लगाना. ऐसा जहां चाहिये वहां सर्वत्रभी करना । २ इस शब्दके जगह चाहिये सो संख्यावाचक शब्द धरना ।

राजापि ग्रहीतुं न शक्नोति	राजा भी लेनेको नहीं सकताहै.
भ्रातृभिरपि न भुज्यते	भाइयोंसे भी नहीं भोगाजाताहै.
भारोपि न भवति	बोझा भी नहीं होताहै.
यथा रूप्यकादिधनं दानेन वि-नश्यति तथा इदं विद्याधनं दाने कृते कदापि न विन-श्यति	जैसा रुपयाआदिक द्रव्य दानसे नष्ट होताहै. तैसा यहविद्या-धन दान किया तोभी कभीभी नाश पातानहीं.
किंतु नित्यं व्यये कृते वर्धते एव	तो नित्य खर्च करतेभी बढताहीहै.
तस्माद्विद्याऽध्येतव्या	तिसवास्ते विद्या पढना.
विद्यैव नृणां भूषणम्	विद्याही मनुष्योंका भूषण है.

शब्दकोश २.

पाठशाला-शाला, पढनेकी जगह.
तत्र–तहां.
अभिवंद्य–नमस्कारकरिके.
विद्या–ज्ञान, ज्ञानका ग्रंथ.
अध्येतव्या–पढने योग्य.
सकाशात्–पाससे.
विद्याग्रहणप्रकार–ज्ञान सीखने-की रीति.
त्रिधा–तीन प्रकारसे.
शुश्रूषा–सेवा चाकरी.
द्रव्यदान–धन देना.
अन्या–दूसरी.
समीप–पास, नजदीक.
दृढ–मजबूत.
स्थित्वा–रहकर.
शिथिल–ढीला, ढीली.
भवति–होता, ती-है.
बहु–बहुत.
विद्यार्थिन्–विद्यासीखनेकी इ-च्छाकरनेवाले.
अधीयते–पढतेहैं.
तथा–तैसे.
केचन–कोईएक.
तर्कशास्त्र–न्यायशास्त्र.

पठंति—पढतेहैं.
कतिपये—कितनेक.
सर्व—सब.
शास्त्राध्ययनकर्तृ—शास्त्रका पठन करनेवाले.
संति—हैं.
आंग्लपाठशाला—अँग्रेजीस्कल.
आंग्लभौमभाषा—अँग्रेजीभाषा.
चन्द्रशेखर—चंद्रशेखरनामक.
पञ्चम—पाँचवाँ.
पुस्तक—इयत्ता, ग्रंथ.
पठति—पढताहै.
एकमास—एक महीना.
परीक्षा—इम्तिहान, चौकसी.
भविष्यति—होगी.
दशन्—दश.
उत्तीर्ण—उतरा, उतराहुआ, पास हुआ.
एव—ही, निश्चय.

श्रेष्ठ—उत्तम.
यथा—जैसा कि.
दस्यु—चोर.
ह्रियते—हरणकियाजाताहै.
राजन्—राजा.
अपि—भी, समुच्चय, निंदा.
ग्रहीतुं—लेनेको.
शक्नोति—सक्ताहै.
भ्रातृ—भाई.
भुज्यते—उपभोग किया जाताहै.
भार—बोझा.
रूप्यकादिधन—रुपैया आदिक द्रव्य.
विनश्यति—नष्ट होताहै.
कृत—किया, कियाहुआ.
कदापि—कभीभी.
व्यय—खर्च.
वर्धते—बढताहै.
नृ—मनुष्य.
भूषण—अलंकार.

तृतीयः पाठः ३.

मित्रसंगमोपदेशः।

संस्कृतवाक्यानि-	प्राकृतवाक्यानि-
भो मित्र कुत आगतोसि ?	अहो मित्र ! तू कहांसे आया है ?
एहि स्वागतं ते	आ, तेरा अच्छा आना हुआ.
सुदिनमद्य भवत्समागमेन	आज आपके समागमसे अच्छा दिवस हुआ.
किमधीतमेतावत्कालपर्यंतं ?	इतने समयतक क्या अध्ययन किया?
कस्मिन्विषयेऽभ्यासः कृतः ?	कौनसे विषयमें अभ्यास किया ?
यत् अधीतं तत् दृढम् अस्ति न वा ?	जो अध्ययन किया वह दृढ (मजबूत) है, या नहीं ?
मम विद्या तु दृढा अस्ति	मेरी विद्या तो दृढ (मजबूत) है.
प्रत्यहं च अधीये अद्यापि	आजतक दररोज पढताहूं.
तेन मे विद्या प्रतिदिनं सज्जीभवति	तिस करिके मेरी विद्या रोजके रोज तैयार होतीहै.
त्वमपि विद्यायाम् अभ्यासं कुरु	तूभी विद्यामें अभ्यास कर.
तेन ते सज्जा विद्या भविष्यति	तिस करिके तेरी विद्या तैयार होगी
अस्माकं गुरुः नः पाठान् प्रतिदिनं पृच्छति	हमारा गुरु हमसे दररोज पाठ पूछता है.
तथा युष्माकं पृच्छति न वा ?	तैसा तुम्हारा पूछता है या नहीं ?
विद्या तु गुरुशुश्रूषाम् अंतरा न सिध्यति	विद्या तो गुरुकी सेवा करे विना सिद्ध नहीं होती.
अतः नित्यं गुरुं परिचरेत्	इस वास्तै हमेशः गुरुको सेवे.
तुष्टे गुरौ किं दुर्लभं ?	गुरु संतुष्ट हुए संते फिर क्या दुर्लभ है ?

पाठसमये च निरर्थकं वचनं न वदेत्	पाठ लेनेके समय व्यर्थ भाषण करे नहीं.
यदा गुरुर्भाषेत तदा तत् श्रोतव्यमेव	जब गुरु बोले, तब वह सुननाही.
रुष्टे गुरौ न किंचित्प्रत्युत्तरं दद्यात्	गुरुको क्रोध आनेपर कुछभी उलटा जबाब देना नहीं.
एतदेव युष्माकं अस्माकम् च हितम्	यहही तुम्हारा और हमारा कल्याण है.
इतोऽन्यः पंथाः न विद्यते	इससे दूसरा मार्ग नहीं.
शालायां सर्वेभ्यः प्रागेव गन्तव्यम्	शालामें सबसे प्रथमही जाना.
गत्वा च तत्र पठनीयान् पाठान् पुनः पुनरावृत्त्या मुखोद्गतान् कुर्यात्	और तहां जाकर जो पाठ पढनेके हैं, वे फिर फिर आवृत्ति (संथा) देकर मुखपाठ करे.
गुरुणा पृष्टे एव दक्षतया उत्तरं दद्यात्	गुरुकेपूछनेही ढीठाईसे उत्तरदेवे.
अपृष्टे न किंचिद्वदेत्	नहीं पूछते कुछ न बोले.
सत्यां पाठशंकायां नम्रतया पृच्छेत्	पाठमें शंका होय तो विनयसे पूछे.
गुरोरग्रे चांचल्यं नाचरेत्	गुरुके आगे चालाकी नहीं करे.
न च क्रीडेत्	खेले नहीं.
नापलपेत्	बकवाद करे नहीं.
न निषीदेत्	बैठकसे बैठे नहीं.
गुरून् दृष्ट्वा उत्तिष्ठेत्	गुरुजनोंको देखके उठ खडा होवे.

अध्ययनेन वंध्यं दिवसं न गमयेत्	अध्ययनसे रीता दिन नहीं गमावे.
आयुः स्वल्पमस्ति	आयुष्य थोडा है.
अध्येतव्यं च बहु	पढनेका तो बहुत है.
अतःयत्सारं तदेव अध्येतव्यम्	इसवास्ते जो सार होय वही पढना.

शब्दकोश २.

भोः—अहो, ओ.	अधीये—(मैं पढताहूं.)
मित्र—सखा.	अद्यापि—आजतकभी.
कुतः—कहांसे.	प्रतिदिनं—दररोज.
आगत—आया.	सज्जीभवति—तैयार हो ता-ती-है.
असि—(तू) है.	कुरु—(तू) कर.
एहि—(तू) आ.	
स्वागत—अच्छा आना.	पाठ—सीखनेका पहाडा.
सुदिन—अच्छा दिन.	
अद्य—आज.	पृच्छति—(वो) पूछता-ती-है
भवत्समागम—आपका मिलाप.	तु—तो.
किम्—क्या.	गुरुशुश्रषा—गुरुकी सेवा.
अधीतं—पढा, पढाहुआ.	अंतरा—विना, बिगर.
एतावत्कालपर्यंतं—इतने समयतक.	सिध्यति—तैयार हो ता-ती-है.
	अतः—इसवास्ते.
विषय—भाग, प्रकार, देश.	परिचरेत्—(वो)सेवे. चाकरी करे.
दृढ—पक्का. मजबूत.	तुष्ट—संतोष पायाहुआ.
प्रत्यहं—दररोज.	पाठसमय—अध्ययनकी वेला.

निरर्थक—व्यर्थ, फोकट.
वदेत्—(वो) बोले.
भाषेत—(वो) कहे.
श्रोतव्य—सुननेयोग्य.
रुष्ट—क्रोधित.
प्रत्युत्तर—उलट जबाव.
दद्यात्—(वो) देवे.
हित—कल्याण.
इतः—इस्से, यहांसे.
अन्य—दूसरा.
पथिन् (पन्थाः) मार्ग.
विद्यते—(वो) है.
तत्र—तहां.
पठनीय—पढनेयोग्य.
पुनःपुनः—फिर फिर.
आवृत्ति—सबक, संथा.
मुखोद्गत—मुखपाठ.
पृष्ट—पूछा.
दक्षता—ढिठाई.
उत्तर—जबाव.
पाठशंका—पाठमें संशय.
नम्रता—विनय.
पृच्छेत्—(वो) पूछे.
चांचल्य—चालाकी.
क्रीडेत्—(वो) खेले.
अपलपेत्—(वो) बकवादकरे, गुमरक्खे.
निषीदेत्—(वो) नीचे बैठरहे.
दृष्ट्वा—देख करकै.
उत्तिष्ठेत्—(वो) उठ खडा होजावे.
वंध्य—रीता, रहित.
गमयेत्—(वो) गमावे,
आयुस्—उमर.
स्वल्प—थोडा-डी.
अध्येतव्य—पढने योग्य (विद्या).
बहु—बहुत.
सार—श्रेष्ठ, फलप्रद.

चतुर्थः पाठः ४.

भोजनोपदेशः ।

संस्कृतवाक्यानि-	प्राकृतवाक्यानि-
अयि बालक सूदं पृच्छ	हे बालक ! रसोइयादारकूं पूंछ.
रसवती सिद्धा न वा ?	रसोई तैयार हुई या नहीं ?
सुसिद्धं सर्वमन्नम्	सब अन्न तैयार हुआ.
उत्तिष्ठत भोजनार्थम्	भोजनके वास्ते उठो.
इमे वयमागताः	ये हम आये.
अद्य भोजने व्यञ्जनोपस्कराः बहवः संति	आज भोजनमें सालनके पदार्थ बहुत हैं.
सर्वमपि भोजनीयमद्य सुस्वादु वर्तते	सबही भोजन आज बहुत स्वादिष्ठ है.
भोःसूद मह्यं झटिति अन्नं परिविविड्ढि	हे रसोइयादार ! मुझकूं जलदी अन्न परोस.
भो मातः क्षुधा मां बाधते	हे मा ! भूख मेरेकूं सताती है.
द्रुतं मे भोजनं देहि	जलदी मुझकूं भोजन दे.
अद्य भोजने तु पूरिकाः सोहालिकाः लड्डुकाश्च बहवः संति	आज भोजनमें तो पूडी, सोहालिया (कचौडी), और लड्डू बहुत हैं.
भोजनावसरे अतिथिम् आह्वयामि	भोजनके समय अतिथि (पाहुने, या भिक्षुकों) को बुलाताहूं.
भोभो अतिथयः इहागच्छत	अहो अहो अतिथिओ ! (भिक्षुको!) यहां आओ.
इदं गृह्णीत	ये लेवो.
इदं ब्रूत	ये कहो.

अहं प्रत्यहम् अतिथिं ब्राह्मणम् आहूय तेन सह भोजनं करोमि	मैं हररोज अतिथि ब्राह्मणको बुला के उसके साथ भोजन करताहूं.
नतु एकाकी कस्मिन्नपि दिने भोक्तुं प्रवृत्तः आसम्	कौनसेभी दिन अकेला जीमनेको मैं प्रवृत्त हुआ नहीं.
अतिथयोऽपि साक्षाद्धरेर्मूर्तयः संति	अतिथि भी प्रत्यक्ष भगवान्की मूर्तियां हैं.
इति हि शास्त्रं प्रमाणम्	ऐसा तो शास्त्र प्रमाण है.
अहो ब्राह्मणाः यूयं यथेच्छं भुङ्ध्वम्	अहो ब्राह्मण हो ! तुम यथेच्छ भोजन करो.
यद्रोचते तदग्राह्यं	जो रुचताहोय, सो लेना.
यन्न रोचते तत्त्याज्यं	जो नहीं रुचता होय, सो डार देना.
इदं सुस्वादु जलं पीयतां	यह मीठा जल पीना.
एतच्च घृतं हैयंगवीनमस्ति	यह घी कलके गोदोहनसे तैयार किया हुआ (ताजा) है.
शाकास्तु समीचीनाः संति	शाक-भाजी तो अच्छे हैं.
तक्रं च घनमस्ति	छाछभी घन (गाढा) है.
सूपादयः पदार्थाः शोभनाः विद्यंते	दाल आदिक पदार्थ अच्छे हैं.
इदमन्नं भुंजतः मे भूयान् संतोषः उत्पद्यते	ये अन्न खानेवाले मुझकूं बडा संतोष उत्पन्न होता है.
अद्य आतृप्ति भोजनं जातं	आज तृप्ति होय तबतक भोजन हुआ.
भोजनस्थले च रंगावली समंततः सुविन्यस्ता आसीत्	भोजनकी जगामें सबओर रङ्गावली निकाली हुई थी.

धूपगंधश्च सर्वतः परिव्याप्त आसीत्	धूपका सुवास सब ओर भरा हुआ था.
सुविचित्राणि वादित्राणि अवाद्यंत	अनेक प्रकारके बाजे बजने लगे.
भोजनोत्तरं मुखं प्रक्षाल्य अहं त्रयोदशगुणं तांबूलम् अभक्षयं	भोजनके पीछे मुख धोकरके तेरह गुणका तांबूल मैं खाताभया.
अन्येभ्यश्च अददां	दूसरेनकूंभी मैं देताभया.
पश्चात् अहं किंचित्कालम् अस्वपं	फिर मैं कुछ देर सोताभया.
तत उत्थाय स्वकार्यम् अकरवं	तदनन्तर उठके अपना काम मैं करताभया.
एष एव मे नित्यक्रमः	यही मेरा नित्यका क्रम है.
अनेन च आचरणेन कोपि न सीदति	इस आचरणसे कोईभी दुःख नहीं पाता है.
शरीरं च दृढं भवति	शरीरभी मजबूत होता है.
बुद्धिश्च वर्धते	बुद्धि बढती है.
तस्मात् इदं प्रतिदिनं कुर्वीत	तिस वास्ते यह दररोज करे.
एष भोजनोपदेशः	यह भोजनका उपदेश है.

शब्दकोश ४.

सूद—रसोइयादार.
पृच्छ—(तू) पूंछ.
रसवती—रसोई.
सिद्धा—तैयार.
उत्तिष्ठत—(तुम) उठो.
व्यंजनोपस्कर—सालन दाल भाजी

सुस्वादु—अच्छा मीठा.
झटिति—जलदी.
परिवेविढ्ढि—(तू)परोस.
क्षुधा—भूख.
बाधते—(वो) सताता-ती-है.
द्रुतं—जलदी.
देहि—(तू) दे.
पूरिका—पूरी.
सोहालिका—कचौरी, सोहालिया.
अतिथि—परोणा, भिक्षुक.
भोजनावसर—जीमनेका समय.
आह्वयामि— (मैं) बुलाताहूं
इह—यहां
आगच्छत—(तुम) आओ
गृह्णीत—(तुम) लेओ.
ब्रूत— (तुम) बोलो.
आहूय—बुलायके.
एकाकिन्—अकेला.
भोक्तुम्—जीमनेको.
प्रवृत्त—लगाहुआ.
आसम्— (मैं) था.
साक्षात्—प्रत्यक्ष.
हरि—विष्णु भगवान्.
मूर्ति—आकार.

यथेच्छम्—इच्छाके अनुसार.
भुंड्ध्वम् - (तुम) जीमो.
रोचते—रुचताहै, अच्छा लगताहै.
ग्राह्यं—लेना, लेने योग्य.
त्याज्यं—छोडना, छोडने योग्य.
पीयतां—पीना.
घृत--घी.
हैयंगवीन—कलके दिन गायको दोहन करके आज तैयार किया हुआ, (ताजा मक्खनका) घृत.
शाक—भाजी.
समीचीन—सुंदर.
तक्र—छाछ.
घन—गाढा.
सूपादि—दालआदिक.
पदार्थ—चीज.
शोभन—अच्छा.
भुंजत्—जीमनेवाला.
भूयस्—बहुतसा-सी.
सन्तोष—आनंद.
उत्पद्यते—उपजता है.
आतृप्ति—संतुष्ट होवे तबतक.
भोजनस्थल—जीमनेकी जगह.
रङ्गावली—चित्रविचित्र रंगोंकी वेलबूटी.

समन्ततः–सब ओरसे, आसपाससे.
सुविन्यस्त–अच्छी रीतिसे रक्खा-क्खी-हुआ-ई.
आसीत्–था, थी.
धूपगंध–धूऔंका सुगंध.
सर्वतः–सब ओरसे.
परिव्याप्त–भराहुआ.
सुविचित्र–अनेकप्रकारका.
वादित्र–बाजा.
अवाद्यंत–(वे) बजतेभये, बजती भई.
भोजनोत्तरम्–भोजनके उपरांत.
प्रक्षाल्य–धो करकै.
त्रयोदशगुण–तेरह गुणका.
ताम्बूल–बीडा.
अभक्षयं–(मैं) खाताहुआ.
अददां–(मैं) देताहुआ.
अस्वपं–(मैं) सोताहुआ.
स्वकार्य–अपना काम.
अकरवं–(मैं) करताहुआ.
नित्यक्रम–रोजकी चाल.
सीदति–(वो)दुःख पाता–ती, है.
वर्धते–(वो) बढता-ती, है.
भोजनोपदेश–भोजनका सिखामन

पञ्चमः पाठः ५.

आपणोपदेशः ।

संस्कृतवाक्यानि–	प्राकृतवाक्यानि–
अस्मिन्ग्रामे आपणः अस्ति किम् ?	इस गाममें बजार है क्या ?
अत्र सर्वापि सामग्री मिलति किम् ?	यहाँ सब सामग्री मिलती है क्या ?
किमपेक्ष्यते भवद्भिः ?	आप क्या चाहते हैं ?
मम तु सर्वापि भोजनसामग्री अपेक्ष्यते	मुझकूं तो सबही भोजनकी सामग्री चाहेती है.

घृतं कियता मूल्येन लभ्यते?	घी कितने कीमतसे मिलता है ?
तण्डुलानाम् एकसेरपरिमितानां किं मूल्यम्?	एक सेर चावलोंका क्या दाम ?
गोधूमचूर्णं कथं वर्तते?	गेहूंका चून कैसा है ?
शाकान् समानय	भाजी लेआ.
द्वयोः ताम्रिकपणयोः तैलमानय	दो पैसेका तेल ला.
पत्रावल्यः क्व मिलंति ?	पत्रावली कहां मिलती हैं?
एकपणस्य द्रोणकाः कति दीयंते ?	एक पैसके कितने दोने देतेहो ?
आपणः केन मार्गेण आयाति?	बजार किस रास्तासे आता है ?
अत्र ग्रामे ब्राह्मणानां गृहाणि क्व सन्ति ?	इस गाममें ब्राह्मणोंके घर कहां हैं ?
अत्र च वणिग्जनानां गृहश्रेणी केन मार्गेणायाति?	यहां बनियालोगोंके घरोंकी पंक्ति किस रास्तेसे आती है ?
तत्राहं गन्तुमिच्छामि	तहां मैं जानेको चाहताहूं.
तत्र वयं गंतुमिच्छामः	तहां हम जानेको चाहते हैं.
तद्भवान् जानाति किम्?	वह आप जानते हैं क्या ?
त्वं यदि जानासि तर्हि ब्रूहि	तू जो जानता होगा, तो कह.
वृन्ताकाः कियन्मूल्येन सेरप्रमिता दीयन्ते ?	बैंगन कितनी कीमतसे सेरभर देते हैं ?
मम अङ्गरक्षार्थं वस्त्रं क्रीणामि	मेरे अंगरखाके वास्ते कपडा खरीदताहूं.
सः किं विक्रीणाति ? पृच्छ	वह क्या बेचताहै ? पूंछ.
तावतः किं गृह्णाति ?	तितनेका क्या लेताहै ?

अहम् एतावत् ददामि	मैं इतना देताहूं.
इतः अधिकं मत्तो न लभ्यते	इससे अधिक मुझसे न मिलेगा.
यदि इच्छास्ति तर्हि गृहाण	जो इच्छा हो तो ले.
नो चेत् अन्यत्र पश्य	नहीं तो दूसरी जगह देख.
अस्य आपणगृहस्य मासिकं भाटकं किमस्ति ?	इस दूकानके मकानका दरमहा भाडा (किराया) क्या है ?
वस्तुं दीयते वा ?	रहनेको देतेहैं क्या ?
मासि मासि भाटकं दास्यामि	महीने महीने भाडा दूंगा.

शब्दकोश ८.

ग्राम—गाम.
आपण—बजार.
अत्र—यहां.
सर्वा—सब.
सामग्री—सब सामान.
मिलति—मिलता-ती-है.
तु—तो.
भोजन—भोजन, जीमना.
अपेक्ष्यते—चाहता-ती-है.
घृत—घी.
कियत्—कितना.
मूल्य—कीमत.
लभ्यते—मिलता-ती-है.
तण्डुल—चावल.
एकसेरपरिमित—एक सेरभर.
गोधूमचूर्ण—गेहूंका आटा.
कथं—कैसा.
वर्तते—(वो) है.
शाक—भाजी.
समानय—(तू) ला.
द्वि—दोय.
ताम्रिकपण—पैसा.
तैल—तेल.
पत्रावली—पत्तल.
क्व—कहां.
एकपण—एक पैसा.
द्रोणक—दोना.
कति—कितने.

दीयंते—देतेहैं, दियेजाते हैं.
मार्ग—रास्ता.
आयाति—आता-ती-है.
ब्राह्मण—ब्राह्मण.
गृह—घर.
वणिग्जन—बनियालोग.
गृहश्रेणी—घरोंकी पंक्ति.
तत्र—तहां.
अहं—मैं.
गंतुं—जानेको.
इच्छामि—(मैं) इच्छताहूं.
वयं—हम.
भवान्—तू, आप.
जानाति—जानता-ती-है.
यदि—जो.
जानासि—(तू) जानता-ती-है.
तर्हि—तो.
ब्रूहि—(तू) कह.
वृन्ताक—बैंगन.
अंगरक्षण—अँगरखा.

वस्त्र—कपडा.
क्रीणामि—(मैं) खरीदता-ती-हूं.
विक्रीणाति—(वो) बेचता-ती-है.
गृह्णाति—(वो) लेता-ती-है.
एतावत्—इतना.
ददामि—(मैं) देता, ती-है.
इतः—यहांसे, इससे.
अधिकं—ज्यादा.
मत्तः—मेरेसे, मुझसे.
इच्छा—चाहना.
गृहाण—(तू) ले.
नोचेत्—नहीं तो.
अन्यत्र—दूसरी जगह.
पश्य—(तू) देख.
भाटक—भाडा, किराया.
मासिक—महीनेका.
वस्तुं—रहनेका.
मास—महीना.
दास्यामि—(मैं) देऊंगा—गी.

षष्ठः पाठः ६.

जगदनुभवोपदेशः ।

संस्कृतवाक्यानि-	प्राकृतवाक्यानि-
मेघो गर्जति	मेघ गर्जताहै.
चंद्र आह्लादयति	चंद्रमा आनंद देताहै.
सूर्यः प्रद्योतते	सूर्य प्रकाशताहै.
वायुर्वहति	पवन वहता है.
वृक्षाः कंपंते	झाड कांपते हैं.
पर्णानि प्रचलंति	पान हिलते हैं.
फलानि प्रपतंति	फल गिरते हैं.
वसंतेऽभिनवा वनशोभा दृश्यते	वसंतऋतुमें नूतन जंगलकी शोभा दीखती है.
ग्रीष्मे प्रचंडातपो भवति	ग्रीष्म ऋतुमें प्रखर घाम (तडका) होता है.
वर्षर्तौ पृथ्वी सकर्दमा भवति	वर्षाऋतुमें जमीन कर्दमसे युक्त होती है.
नदी वेगेन प्रवहति	नदी जोरसे बहती है.
जलं निर्मलं न मिलति	पानी स्वच्छ नहीं मिलता है.
शरदृतौ चंद्रमाश्चंद्रिकया शोभते	शरदृऋतुमें चंद्रमा चांदनीसे शोभताहै.
सरःसु कमलानि विकसंति	सरोवरोंमें कमल खिलते हैं.
गगनं स्वच्छं दृश्यते	आकाश स्वच्छ दीखता है.
सर्वजनमनःप्रसादो भवति	सब लोगोंके मनको आनंद होताहै.
हेमंते जठरानलः प्रदीप्यति	हेमंतऋतुमें जठराग्नी प्रदीप्त होताहै.

क्षुधा च द्विगुणी भवति	भूख दूनी होती है.
शरीराणि पुष्यंति	शरीर पुष्ट होते हैं.
शिशिरर्तौ निशा महती भवति	शिशिरऋतुमें रात्रि बडी होती है.
दिनं स्वल्पं भवति	दिवस छोटा होता है.
जिह्वया रसं स्वदति	जीभसे रस चखता है.
श्रोत्रेण शब्दमाकर्णयति	कानसे शब्द सुनताहै.
चक्षुर्भ्यां रूपं पश्यति	नेत्रोंसे रूप देखताहै.
घ्राणेन गंधं जिघ्रति	नाकसे गंधको सूंघताहै.
त्वगिंद्रियेण पदार्थान् स्पृशति	त्वचा इंद्रीसे चीजोंको छूताहै.
वाचा वक्ति	वाणीसे बोलताहै.
हस्तेन गृह्णाति	हाथसे लेताहै.
पादाभ्यां गच्छति	पावोंसे जाताहै.
पायुना मलम् उत्सृजति	गुदासे मैल छोडताहै.
उपस्थेनानंदमश्नुते	उपस्थइंद्रीसे आनंदको भोगताहै.
मनसा कार्यं चिंतयति	मनसे कार्यको चिंतवन करताहै.
इमानींद्रियकर्माणि संति	ये इंद्रियोंके कार्य हैं.
इति जगदनुभवः	ऐसा जगतका अनुभव है.

शब्दकोश ६.

मेघ—अभ्र, बादल.
गर्जति—(वो)गर्जना करता-ती-है.
चंद्र—चांद.
आह्लादयति(वो)आनंद देता-ती-है.
सूर्य—सूरज.

प्रद्योतते—(वो)प्रकाशता-ती है.
वायु—वायु-पवन.
वहति—(वो)वहता-ती-है.
वृक्ष—झाड.
कंपंते—(वे) हिलते हैं.

पर्ण—पान.
प्रचलंति—(वे) हलते-ती-हैं.
फल—फल.
प्रपतंति—गिरतेहैं.
ग्रीष्म—उष्णकाल.
प्रचंड—अतिशय कड़ा.
आतप—घाम, तडका, धूप.
वसंत—वसंतऋतु.
अभिनव—नूतन, नया-ई.
वनशोभा—जंगलकी शोभा.
दृश्यते—(वो) दिखता-ती-है.
वर्षर्तु—बरसातका समय.
पृथ्वी—जमीन.
सकर्दम—कादवसे युक्त.
नदी—नदी.
वेग—जोर.
प्रवहति—(वो) बहता-ती-है.
निर्मल—स्वच्छ.
शरदृतु—सरदीका काल.
चंद्रमस्—चांद.
चंद्रिका—चांदनी.
शोभते—(वो) शोभता-ती-है.
सरस्—तालाव.
कमल—कमल फूल.
विकसंति—(वे)प्रफुल्ल होते,ती,हैं.

गगन—आकाश.
स्वच्छ—निर्मल.
सर्वजनमनःप्रसाद—सब लोगोंके मनको आनंद देनेवाला.
हेमन्त—हेमंतऋतु.
जठरानल—पेटमेंका अग्नि.
प्रदीप्यते—प्रदीप्त होता-ती-है.
क्षुधा—भूख.
द्विगुण—दुप्पट.
शरीर—देह.
पुष्यंति—(वे) पुष्ट होते-ती-हैं.
शिशिर—शिशिरऋतु.
निशा—रात्रि.
महती—बडी.
दिन—दिवस.
स्वल्प—थोडा, छोटा.
जिह्वा—जीभ.
रस—स्वाद.
स्वदति—(वो) चखता-ती-है.
श्रोत्र—कान.
शब्द—आवाज, ध्वनि.
आकर्णयति—सुनता-ती-है.
चक्षुस्—आँखि.
रूप—आकार.
पश्यति—देखता-ती-है.

घ्राण--नासिकेंद्रिय.
गंध--वांस, बोय.
जिघ्रति--सूंघता-ती-है.
त्वगिंद्रिय--त्वचा इंद्री.
वाच्--वाणी.
वक्ति--(वो)बोलता-ती-है.
हस्त--हाथ.
गृह्णाति--(वो) लेता-ती-है.
पाद्--पाव.
गच्छति--(वो) जाता-ती-है.
पायु--गुदा.
मल--मैला.
उत्सृजति--(वो) छोडता-ती-है.
उपस्थ--शिश्न, भग.
आनंद--सुख.
अश्नुते--(वो) भोगता-ती-है.
मनस्--मन.
कार्य--काम.
चिंतयति--(वो) सोचता-ती-है.
इंद्रियकर्माणि--इंद्रियोंके काम.
जगदनुभव--जगत्का अनुभव.

सप्तमः पाठः ७.

कालवेलोपदेशः ।

संस्कृतवाक्यानि-	प्राकृतवाक्यानि-
अष्टादशनिमेषैः काष्ठा	अठारह वार नेत्रोंके पलक खुलने और मूंदनेसे एक काष्ठा होतीहै.
त्रिंशत्काष्ठाभिः कला	तीस काष्ठाओंसे एक कला होती है.
त्रिंशत्कलाभिःक्षणः	तीस कलाओंसे एक क्षण होताहै-
द्वादशभिः क्षणैरेको मुहूर्तः	बारह क्षणोंसे एक मुहूर्त होता है.
त्रिंशद्भिर्मुहूर्तैरेकः अहोरात्रः	तीस मुहूर्तोंसे एक दिन और रात होती है.
तदेव दिनं	वोही दिवस.
पंचदशभिर्दिनैरेकःपक्षः	पंद्रह दिवसोंसे एक पक्ष(परववाडा) होताहै.

द्वाभ्यां पक्षाभ्याम् एको मासो भवति	दो पखवाडोंसे एक महीना होताहै.
द्वाभ्यां मासाभ्यामेक ऋतुर्जायते	दो महीनोंसे एक ऋतु होताहै.
एवं संवत्सरस्य षट् ऋतवो भवंति	ऐसे वर्षके छः ऋतु होते हैं.
ते यथा	वे ऐसे.
वसंतः, ग्रीष्मः, वर्षा, शरत्, हेमंतः, शिशिरः.	वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरत्, हेमंत, शिशिर.
मासाश्च द्वादश	महीने बारह.
तेषां नामानि च	तिन्होंके नाम.
चैत्रः,वैशाखः, ज्येष्ठः,आषाढः, श्रावणः, भाद्रपदः, आश्विनः, कार्तिकः, मार्गशीर्षः, पौषः, माघः, फाल्गुनः.	चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, और फाल्गुन.
चैत्रवैशाखौ वसंतः	चैत्र और वैशाख—वसंत.
ज्येष्ठाषाढौ ग्रीष्मः	ज्येष्ठ और आषाढ—ग्रीष्म.
श्रावणभाद्रपदौ वर्षा	श्रावण और भाद्रपद--वर्षा.
आश्विनकार्तिकौ शरत्	आश्विन और कार्तिक—शरत्.
मार्गशीर्षपौषौ हेमन्तः	मार्गशीर्ष और पौष—हेमंत.
माघफाल्गुनौ शिशिरः	माघ और फाल्गुन--शिशिर.
त्रिभिर्ऋतुभिरेकमयनं भवति	तीन ऋतुओंसे एक अयन होताहै.
द्वाभ्यामयनाभ्यामेकं वर्षं भवति	दो अयनोंसे एक वर्ष होताहै.
तदेतन्मनुष्याणां वर्षं	वह यह मनुष्योंका वर्ष है.

उत्तरायणं देवानां दिनम्	उत्तरायण देवोंका दिवस है.
दक्षिणायनं देवानां रात्रिः	दक्षिणायन देवोंकी रात्रि है.
शुक्लपक्षः पितॄणां रात्रिः	शुक्लपक्ष पितरोंकी रात्रि है.
कृष्णपक्षः पितॄणां दिनम्	कृष्णपक्ष पितरोंका दिवस है.
भाद्रपदकृष्णपक्षः पितृपक्ष इत्युच्यते	भाद्रपदकृष्णपक्ष 'पितृपक्ष' ऐसा कहाता है.
माघकृष्णचतुर्दशी शिवरात्रिर्भवति	माघ मासके कृष्णपक्षकी चतुर्दशी 'शिवरात्रि' होती है.
चैत्रशुक्लनवमी रामजयन्ती	चैत्र शुक्लनवमी 'रामजयन्ती' होतीहै.
श्रावणकृष्णाष्टमी कृष्णजयन्ती	श्रावण महीनेके कृष्णपक्षकी अष्टमी 'कृष्णजयन्ती' होती है.
जयन्तीदिनेषु उपोषणं कार्यम्	जयन्तियोंके दिनोंमें उपवासकरना.
सप्त वाराः सन्ति	सात वार हैं.
रविः, सोमः, भौमः, बुधः, बृहस्पतिः, भृगुः, शनिरिति	रवि, सोम, मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र, और शनि ऐसे.
शनिवारे श्मश्रुकर्म न कर्तव्यं	शनिवारमें हजामत नहीं कराना.
भौमवारे श्मश्रुकर्मणा आयुष्यं क्षीयते	मङ्गलवारमें हजामत करानेसे उमर घटती है.
श्मश्रुकर्मणि चतुर्थीं,षष्ठीम्,अष्टमीं,नवमीं, चतुर्दशीं, पौर्णमासीम्, अमावास्यां च विवर्जयेत्	हजामत करानेमें चौथ, छठि, आठम, नौमी, चौदस, पूनम और अमावस इन्होंको वर्ज दे.
शनिवारे तैलाभ्यङ्गो लक्ष्मीप्रदः	शनिवारको तेलसे मालिश करना लक्ष्मी ऐश्वर्य देनेवाला है.

सोमवारे तैलाभ्यङ्गः कांतिवर्धनः सोमवारमें तैलाभ्यंग कांति बढ़ताहै.
बुधवारे विद्यारम्भः शुभः बुधवारमें विद्या सीखनेकी शुरुवात अच्छी है.

शब्दकोश ७.

अष्टादश—अठारह.
निमेष—नेत्रोंके पलकोंका उघारना और मूंदना.
काष्ठा—दिशा.
त्रिंशत्—तीस.
कला—कला—(विशेषनाम.)
द्वादश—बारह.
क्षण—क्षण—(वि०नाम)
मुहूर्त—मुहूर्त (वि०नाम.)
एक—एक.
अहोरात्र—दिन और रात.
तदेव—वोही.
पञ्चदश—पंद्रह.
पक्ष—पखवाडा.
मास—महीना.
संवत्सर-वर्ष.
षट्—छः.
ऋतु—ऋतु, मोसम.
त्रि—तीन.
अयन—अयन—(वि०नाम.)
वर्ष—वर्ष.
एतत्—ये.
मनुष्य—मनुष्य, आदमी.
उत्तरायण—जिसमें सूर्यकी गति उत्तरकी तरफ, जाती है ऐसे छः महीने.
देव—देवता.
दक्षिणायन—जिसमें सूर्यकी गति दक्षिण दिशाकी ओर जाती है; वह काल.
रात्रि—रात.
शुक्लपक्ष—उजीयारा पखवाडा.
पितृ—पितर.
भाद्रपदकृष्णपक्ष— भाद्रपद मासका कृष्णपक्ष.
पितृपक्ष—पितर पखवाडा 'महालय'
माघकृष्णचतुर्दशी—माघमास के कृष्णपक्षकी चौदसी.

शिवरात्रि—शिवरात.
रामजयन्ती—रामजन्म.
कृष्णजयन्ती—कृष्णजन्म.
उपोषण—उपवास.
कार्य—करने योग्य काम.
सप्तन्—सात.
वार—दिन.
श्मश्रुकर्म—हजामत.
आयुष्य— आयर्दा, उमर.
क्षीयते—(वो) घटता-ती-है.
विवर्जयेत्—(वो) दूर करे.
तैलाभ्यङ्ग—तैलसे मालिस.
लक्ष्मीप्रद—ऐश्वर्यको देनेवाला.
विद्यारम्भ—सीखनेकी शुरुवात.
शुभ—अच्छा, अच्छी.

अष्टमः पाठः ८.

सामान्यनीत्युपदेशः ।

संस्कृतवाक्यानि-	प्राकृतवाक्यानि-
देवं सेवस्व	देवको सेव.
गुरुं भज	गुरुको सेवनकर.
हरिं स्मर	हरिको स्मरणकर.
सत्यं ब्रूहि	सच्चा बोल.
धर्मं चर	धर्मका आचरण कर.
मित्रं प्रीणीहि	मित्रको संतुष्टकर.
क्रोधं जय	क्रोधको जीत.
कामं जहि	कामको नाशकर.
दयां धारय	दयाको धारणकर.
देवान्पूजय	देवोंको पूजनकर.
पशून्पालय	पशुओंको पालनकर.
हिंसां मा कृथाः	हिंसा मतकर.
हिंसया लक्ष्मीः नश्यति	हिंसा करनेसे लक्ष्मी नष्ट होती है.

अहिंसा परमोधर्मः	हिंसा नहीं करना यह श्रेष्ठ धर्म है.
असत्यं मा ब्रूथाः	झूंठ मत बोल.
नासत्यात्पातकं परं	झूंठसे दूसरा अधिक पाप नहीं.
याचकेभ्यो दानं देहि	याचकोंको दान दे.
दानाद्वै वर्धते यशः	दानसे कीर्ति बढती है.
विद्यां गुरोरवाप्नुहि	गुरूसे विद्याको प्राप्तकर.
विद्या यशः प्रापयति	विद्या यशको कमाती है.
विद्या अभ्याससाध्या भवति	विद्या अभ्यास करनेसे साध्य होती है.
पितरं मातरं च प्रणम	पिता और माताको नमस्कार कर.
मातुः पितुश्चाधिकं किमपि नास्ति	मातासे और पितासे अधिक कुछ नहीं है.
मित्रादधिकः साह्यकर्ता नास्ति	मित्रसे अधिक साहाय्यकारी नहींहै
मित्रं सुखं दुःखं च सहैव अनुभवति	मित्र सुख और दुःखको (मित्रके) साथही भोगताहै.
गुह्यं च गोपायति	गुप्त बातको छिपाताहै.
हितम् उपदिशति	हितके उपदेश करताहै.
आहितम् सूचयति	अहितको जतादेताहै.
सत्कुलजां भार्याम् उपयमेत्	अच्छे कुलमें पैदाहुई स्त्रीको ब्याहे.
परदारान्न गच्छेत्	पराई स्त्रीके प्रति जावे नहीं.
परदारेभ्यो भयं भवति	पराइ स्त्रीसे भय होताहै.
परस्त्रियो द्रव्यस्यैव	पराई स्त्रियां द्रव्यकी ही रहती हैं.
तासु प्रेम न विद्य	तिन्होंमें प्रेम नहीं रहता है.
परस्त्रीभ्यो दुष्टरोगा उत्पद्यन्ते	पराइ स्त्रियोंसे (गरमी परमा आदि) खराब रोग पैदा होते हैं.

स्वस्त्रियमेवोपगच्छेत् — अपनीही स्त्रीके पास जावे.
अभक्ष्यं मा भुंक्थाः — नहीं खाने लायक पदार्थको मत खाओ.

शब्दकोश ८.

सेवस्व— (तू) सेव नकर.
गुरु— पढानेवाला, बड़ा.
भज— (तू) सेव नकर.
हरि—भगवान्.
स्मर— (तू) चिंतवनकर.
सत्य— सच्चा.
ब्रूहि— (तू) बोल.
धर्म— शुद्ध आचार.
चर— (तू) कर.
प्रीणीहि— खुशकर.
क्रोध— गुस्सा.
जय— (तू) जीत.
काम— कामदेव.
जहि— (त) नाशकर.
दया— कृपा.
धारय— (तू) पकड.
पूजय— (त) पूजाकर.
पशु— जानवर.
पालय— (तू) रक्षणकर.
हिंसा— हत्या.
मा— नहीं, मत.
कृथाः— (तू) कर.
लक्ष्मी—ऐश्वर्य.
नश्यति— नष्टहोता-ती-है.
अहिंसा— हत्या नहीं करना सो.
परम—श्रेष्ठ.
असत्य—झूठ.
ब्रूथाः— (तू) बोल.
पातक—पाप.
पर— श्रेष्ठ, अन्य, अधिक.
याचक— भिखारी, कँगाल.
दान—दान, खैरात.
देहि— (तू) दे.
वै—निश्चयसे.
वर्धते—(वो)बढ़ता-ती-है.
यशस्— कीर्ति.
विद्या— ज्ञान, इल्म.
अवाप्नुहि— (तू) पा.
प्रापयति—पमाता-ती-है.
अभ्याससाध्या—अभ्याससे सिद्ध होनेवाली.

पितृ—बाप.
मातृ—मा.
प्रणम—(तू) नमस्कार कर.
किमपि—कुछभी.
साह्यकर्ता—मदतकरनेवाला.
सुख—आनंद.
दुःख—कष्ट.
अनुभवति—(वो) भोगता-ती-है.
सहैव—साथही.
गुह्य—छिपीबात.
गोपायति—(वो) गुप्तरखता-ती-है, रक्षणकरता-ती-है.
हित—कल्याण.
उपदिशति—(वो) कहता-ती-है.
अहित—अकल्याण.
सूचयति—(वो) जतादेता-ती-है.
सत्कुलजा—अच्छे खानदानके कुलमें पैदाहुई.

भार्या—स्त्री.
उपयमेत्—(वो) व्याहे.
परदार—दूसरेकी स्त्री.
गच्छेत्—(वो) पास जावे.
भय—भीति, डर.
उपगच्छेत्—(वो) पास जावे.
द्रव्य—पैसा, धन, दौलत.
प्रेमन्—प्रीति.
न विद्यते—नहीं है.
परस्त्री—दूसरेकी स्त्री.
दुष्टरोग—खराबरोग (गरमी परमा आदिक).
उत्पद्यते—उपजता-ती-है.
अभक्ष्य—नहीं खाने योग्य.
मा—नहीं, मत.
भुंक्थाः—(तू) खा.

नवमः पाठः ९.

लोकानुभवोपदेशः।

संस्कृतवाक्यानि—	प्राकृतवाक्यानि—
अज्ञः शिशुः क्रीडति	मूर्खबालक खेलताहै.
साधवः प्राणिमात्रेषु दयां कुर्वंति	अच्छे सज्जन सब प्राणियोंपर दया करते हैं.

धीरो धैर्यं न मुंचति	धीर पुरुष धैर्य नहीं छोडता है.
अहंकारी विनश्यति	अहंकार करनेवाला नाश पाताहै.
शोभनः शिशुर्विद्याम् उपार्जयति	अच्छाबालक विद्याको मिलाताहै.
सुज्ञः केनापि सह कलहं न करोति	अच्छा जाननेवाला किसीकेभी साथ झगडा करता नहीं.
धनी व्यापारं कुरुते	पैसेवाला व्यापार करता है.
व्यापारे वसते लक्ष्मीः	व्यापारमें लक्ष्मी रहती है.
स्वामी भृत्याय वेतनं ददाति	धनी चाकरको पगार देताहै.
विद्या विनयं ददाति	विद्या नम्रताको देती है.
विनयात्पात्रताम् एति	नम्रतासे योग्यताको पाता है.
पात्रत्वात् धनम् आप्नोति	योग्यतासे धन पाता है.
धनात् धर्ममाप्नोति	धनसे धर्म पाता है.
धर्मेण सुखमेधते	धर्म से सुख बढता है.
गुरुसेवया बुद्धिर्वर्द्धते	गुरुकी सेवासे बुद्धि बढती है.
सुष्ठ्वाचरणेनापि बुद्धिर्वर्धते	अच्छे आचार पालनेसेभी बुद्धि बढती है.
सज्जनसंगात् सत्फलं लभते	अच्छे लोगोंके समागमसे अच्छा फल मिलता है.
दुर्जनसंगात् दुष्फलं प्राप्नोति	दुर्जनोंके समागमसे खराब फल मिलताहै.
अज्ञानामुपदेशो हिताय न भवति	मूर्खोंको कियाहुआ उपदेश करनेवालेके कल्याणके वास्ते होता नहीं.
किंतु	तो.

अहिताय भवति	अकल्याणके वास्ते होता है.
सर्पाणां दुग्धप्राशनेन यथा गरलं वर्धते	जैसा सर्पोंको दूध पिलानेसे जहर बढता है.
तद्वत्	तैसा.
द्वाभ्याम् अध्ययनम् उत्तमं भवति	दोनोंसे पढना अच्छा होता है.
तपस्त्वेकेनैवोत्तमं भवति	तप तो एकसे (अकेलेसे) ही अच्छा होता है.
द्रव्येण सर्वं प्राप्नोति	धनसे सब मिलता है.
धनवंतं जनाः अधिकं मन्यंते	धनवान्को सब लोक बडा मानते हैं.
विद्यावंतमपि लोका मानयंति	विद्यावान्कोभी लोक मानते हैं.
विद्यावंतं नरपतिरपि सत्करोति	विद्यावान्को राजाभी सत्कार-करता है.

शब्दकोश ९.

अज्ञ—मूर्ख.
शिशु—बालक.
क्रीडति—(वो)खेलता-तीहै.
साधु—सज्जन.
प्राणिमत्र—सब जीव.
दया—कृपा.
कुर्वन्ति—(वे) करते-ती हैं.
धीर—धीरजवान्.
धैर्य—धीरज.

मुंचति—(वो) छोडता-ती—है.
अहंकारिन्—अहंकार करनेवाला.
विनश्यति—(वो) नाश पाता-ती-है.
शोभन—अच्छा.
उपार्जयति—(वो) ग्रहण करता-ती-है.
सुज्ञ—समझनेवाला.
सह—साथ.
कलह—झगडा.

धनिन्—पैसादार.
व्यापार—उद्यम.
कुरुते—(वो) करता-ती-है.
वसते—रहता-ती-है.
स्वामिन्—धनी.
भृत्य—नौकर.
वेतन—पगार, तनख्वाह.
विनय—नम्रता.
पात्रता—योग्यता.
एति—(वो) पाता-ती-है.
धन—दौलत.
आप्नोति—(वो) पाता-ती-है.
धर्म—शास्त्रोक्त आचार.
सुख—आनंद.
एधते—(वो) बढ़ता-ती-है.
सेवा—चाकरी.
बुद्धि—अक्ल.
वर्धते—(वो) बढता-ती-है.
सुष्ठु—अच्छा.
आचरण—आचार.
दुर्जन—खराबमनुष्य.
सङ्ग—सहवास.
दुष्फल—(बुराफल)
प्राप्नोति—(वो) पाता-ती-है.
सज्जन—अच्छा मनुष्य.
सत्फल—उत्तम फल.
दुग्धप्राशन—दूधका पीना.
गरल—जहर.
तद्वत्—तैसा.
अध्ययन—पढना.
तपस्—तप.
द्रव्य—धन.
मन्यंते—(वे) मानते हैं.
मानयंति—सत्कार करते हैं.
नरपति—राजा.
विद्यावत्—विद्वान्.

दशमः पाठः १०.

परस्परसंभाषणोपदेशः ।

संस्कृतवाक्यानि—	प्राकृतवाक्यानि—
कस्त्वं ?	त कौन है?
किं तव नाम?	क्या तेरा नाम है ?

(अमुक) नामाहम्	मैं (अमुक) नामवाला हूं.
एहि मित्र	आ ओ मित्र !
स्मरसि मित्र तत्र वयम् अवसाम	हे मित्र ! याद है ? कि. अपने वहां रहतेथे.
अभिजानासि किं तस्मिन् गृहे अभुञ्ज्महि	याद है क्या ? कि अपने उस घरमें जीमतेथे.
नाहं दक्षिणां दिशं जगाम	मैं दक्षिणदिशाको गया नहीं.
स आगच्छत् किम्	वो आया क्या ?
स जगाम किम्	वो गया क्या ?
कदा आगतोसि	(तू) कब आया ?
अयमागच्छामि	ये आताहूं.
कदा आगमिष्यसि	कब (तू) आवेगा.
मास्तु	मतहो—नहीं चाहिये.
अविचार्य किमपि न कर्तव्यम्	कुछ भी विचार किये विना नहीं करना.
कश्चित् रक्षकः अस्ति न वा ?	कोई भी रखवाला है या नहीं?
तावत् अत्र स्थातव्यम्	तबतक यहां रहना.
यावत् अहम् आगच्छामि	जबतक मैं आताहूं.
वद	(तू) बोल.
कुतो न वदसि	क्यों नहीं बोलताहै.
किं त्वया अपराद्धं ?	तुझने अपराध किया है क्या ? अथवा तुझने क्या अपराध किया है ?
इमं तव अपराधं क्षमे	इस तेरे अपराधको क्षमा करताहूं.
इतःपरम् एतादृशं कर्म मा कार्षीः	इसके आगे ऐसा काम मत कर.
इमं कोटपालं पश्य	इस कोतवाल [सिपाही] को देख.

एनम् आह्वयामि	इसको (मैं) बुलाताहूं.
अयि मित्र पश्य जनानां प्रवृत्ति	हे मित्र ! लोकोंकी चाल देख.
सर्वेपि मनुष्याः स्वे स्वे कर्मणि अभिरताः संति	सबही मनुष्य अपने अपने काममें लगेहुए हैं.
मनुष्याणां च कर्तव्यं नुष्या एव कुर्वंति	मनुष्योंका काम मनुष्यही करते हैं.
पशुकृत्यं मनुष्या नाचरंति	मनुष्य जानवरोंका काम करते नहीं.
ये तु पशुवद्वर्तंते ते तु पशव एव ज्ञेयाः	जे लोग पशसरीखे रहते हैं, वे तो पश ही समझना.
अस्माकं तु मनुष्याणाम् इदं कर्म कर्तुं नोचितं	हम मनुष्योंको तो यह काम करने लायक नहीं.
वयं तु इदं कदापि नो कुर्मः	हम तो यह कभी नहीं करते हैं.
नापि च करिष्यामः	करेंगे भी नहीं.
यदि त्वं करोषि तर्हि यथेच्छ कुरु	जो तू करेगा तो जैसी इच्छाहो वैसा कर.
अहं न द्रक्ष्यामि	मैं नहीं देखूंगा.
न चात्र तिष्ठामि	मैं यहां नहीं खडा रहता.
अन्यत्र गच्छामि	दूसरे ठिकाने जाताहूं.

शब्दकोश १०.

कः—कौन.	स्मरसि—(तू) स्मरण करताहै, याद करताहै.
त्वं—तू.	अवसाम—(हम) रहेथे.
किं—क्या.	अभिजानासि—(तू)याद रखताहै.
नामन्—नाम.	

अभुञ्ज्महि—(हम) जीमतेथे.
दक्षिणादिशा—दक्खिन दिशा.
जगाम—(वो-मैं) गया.
आगच्छत्—(वो) आया.
कदा—कब.
आगतोसि—(तू) आया.
अयं—ये.
आगच्छामि—(मैं) आताहूं.
आगमिष्यसि—(तू) आवेगा.
मास्तु—नहींहो, नहीं चाहिये.
अविचार्य—विचार न करके.
किमपि—कुछभी.
काश्चित्—कोईभी.
रक्षक—रखवाला.
तावत्—तहांतक.
स्थातव्यं—खडे रहना.
यावत्—जबतक.
वद—(तू) बोल.
कुतः—कहांसे, क्यों.
वदसि—(तू) बोलताहै.
अपराद्धं—अपराध किया.
क्षमे—(मैं) माफकरताहूं.
इतःपरं—यहांसे आगे, इससे आगे.
एतादृशम्—ऐसा.
कर्म—काम.
मा कार्षीः—(तू) मतकर.
कोटपाल—कोतवाल, सिपाही.
पश्य—(तू) देख.
आह्वयामि—(मैं) बुलाता-ती-हूं.
अयि—हे-अये-अहो.
जन—मनुष्य, लोग.
प्रवृत्ति—चाल-चलन.
अभिरत—लगाहुआ.
कर्तव्य—करनेका काम.
पशुकृत्य—जानवरोंका काम.
वर्तंते—हैं-रहतेहैं.
ज्ञेय—जानना-जाननेयोग्य.
उचित—योग्य.
कदापि—कभीभी.
यदि—जो.
यथेच्छं—जैसी इच्छा हो वैसा.
द्रक्ष्यामि—(मैं) देखूंगा.
तिष्ठामि—(मैं) रहता-ती-हूं, रहूंगा-गी, खडा-डी-रहूंगा-गी.
अन्यत्र—दूसरी जगह.
गच्छामि—(मैं) जाता-ती-हूं. जाऊंगा-गी.

एकादशः पाठः ११.

प्रासङ्गिकवचनोपदेशः ।

संस्कृतवाक्यानि-	प्राकृतवाक्यानि-
मृगेंद्रस्य मृगेंद्रत्वं वितीर्णं केन कानने	सिंहको मृगराजपना जंगलमें किसने दिया ?
मनस्यन्यद्वचस्यन्यत्कर्मण्यन्यद्धि पापिनां	पापी लोगनके मननेमें दूसरा (औरही), बोलनें म दूसरा (औरही) और काममेंभी दूसरा(औरही) होताहै.
न्याय्यात्पथः प्रविचलंति पदं न धीराः	धैर्यवान् पुरुष वाजवी रास्तेसे पगभरभी खसकते नहीं.
दैवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति	नसीवसे दिया जाता है; ऐसा आलसी आदमी कहते हैं.
यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः	मेहनत कियेपर काम बनता नहीं तौ यहां क्या गुनाह है ?
गच्छ सूकर भद्रं ते वद सिंहो मया हतः	जा सूवर ! तेरा भला हो, तु कहदे कि, मैंने सिंहको मारा.
पण्डिता एव जानन्ति सिंहसूकरयोर्बलम्	विद्वान् मनुष्यही सिंह और सूवर का बल जानते हैं.
गजा यत्र न गण्यन्ते मशकानां तु का कथा	जहां हाथीकी गिनती नहीं, वहां मसाकी क्या बात ?
विधिरहो बलवानिति मे मतिः	अहो दैवही बलवान् है ऐसी मेरी बुद्धि है.
दैवो दुर्बलघातकः	दैव दुर्बलोंका मारनेवाला है.

विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चि-त्कर्तुमर्हति	इस अजर अमर (आत्मा) का नाश कोईभी करसक्ता नहीं.
न जायते म्रियते वा कदाचित्	वह कभी उत्पन्नभी होता नहीं और कभी मरताभी नहीं.
नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः	इसको शस्त्र काटते नहीं और अग्नि जलाता नहीं.
कालो ह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी	यह कालभी अनन्त है, और पृथ्वीभी बडी है.
बहुरत्ना वसुंधरा	पृथ्वी बहुत रत्नोंवाली है.
बालादपि सुभाषितं ग्राह्यम्	बालकोंसेभी अच्छा वचन लेने योग्य है.
कुतो मांसाशिनो दया?	मांस खानेवालेको दया कहांसे ?
निर्दयस्य कुतो धर्मः	निर्दयीको धर्म कहांसे ?
दग्धभूम्युप्तबीजस्य नह्यंकुर-समर्थता	जमीनमें बोयेहुए जले बीजको अंकुर पैदा करनेमें सामर्थ्य नहीं.
दीपनाशे तमोराशिः किमाह्वा-नमपेक्षते	दीपकका नाश होनेपर अंधकारका राशि क्या बुलावा चाहता है ?
समीहितार्थसंसिद्धौ मनः क-स्य न तुष्यति ?	मनवांछित काम तयार होनेपर किसका मन संतुष्ट नहीं होता?
अवश्यमनुभोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्	(अपना) भला या बुरा कर्मका फल अवश्य भोगना चाहिये.
सौभ्रात्रं हि दुरासदम्	अच्छाभायपन दुर्लभ है.
भाग्ये जाग्रति का कथा ?	दैव जगता होय तो फिर क्या बात ?

गुरुरेवहि देवता	गुरुही एक देव है.
आत्मीयापायशंका हि शंकु-र्देहभृतां हृदि	अपने नाशका संशय यह प्राणियों के हृदयमें एक खीला है.
प्रदीपैर्दीपिते देशे नह्यस्ति तमसो गतिः	दीपोंसे उज्ज्वलित किये प्रदेशमें अंधकारकी गति नहीं.
किं पुष्पावचयः शक्यः फलकाले समागते	फल लगनेके समयमें फूल बीननेको क्या योग्य है?
आस्था सतां यशःकाये न ह्यस्थायिशरीरके	ज्जनोंको कीर्तिरूपी शरीरका रक्षण करनेमें इच्छा रहती है. क्षणभंगुर शरीरका रक्षणकरनेमें इच्छा नहीं रहती.
जीवितात्तु पराधीनाज्जीवानां मरणं वरम्	पराये आधीनजीविकाकी अपेक्षासे जीवोंको मरण अच्छा.
अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः	कुप्यारा परंतु हितावह वचनका कहनेवाला और सुननेवाला दुर्लभहै.

शब्दकोश ११.

मृगेंद्र—सिंह.
मृगेंद्रत्व—मृगराजपना, सिंहपना.
वितीर्ण—दिया.
कानन—जंगल.
मनस्—मन.
वचस्—वचन.
अन्यत्—औरही, दूसरा.
पापिन्—पाप करनेवाला.
न्याय्य—वाजवी.
पथिन्—मार्ग.
प्रविचलंति—(वे) खसकते हैं.
पदं—पगभर.

धैर्य—धीरज.
कापुरुष—आलसी, खराबआदमी.
यत्न—मेहनत.
यदि—जो.
सिद्ध्यति-(वो)तयार-होता-ती-है.
दोष—गुनाह.
सूकर—सुवर.
भद्र—कल्याण.
सिंह—सिंह, नाहर.
हत—माराहुआ.
पण्डित—विद्वान्.
गज—हाथी.
गण्यन्ते—गिने जाते हैं.
मशक—झींगुर, डांस.
कथा—बात.
विधि—दैव.
अहो—हो?
मति—बुद्धि.
दुर्बल—दुबला.
घातक—मारनेवाला.
विनाश—नाश, मरण.
अव्यय—जिसका नाश नहीं वो.
कश्चित्—कोईभी.
कर्तुं—करनेको.
अर्हति—(वो) योग्य होता-ती-है.

जायेत—(वो) उपजता-ती-है.
म्रियते—(वो) मरता-ती-है.
कदाचित्—कभीभी.
छिन्दन्ति—(वे) टूक करते हैं.
शस्त्र—हथियार.
दहति—(वो) जलाता-ती है.
पावक—अग्नि.
काल—समय.
हि—निश्चयसे.
निरवधि—अपरिमित.
विपुला—बडी विशाल.
बहुरत्न—बहुतरत्नोंवाली.
वसुन्धरा—पृथ्वी.
बाल—बालक.
सुभाषित—अच्छा भाषण.
ग्राह्य—लेना, लेने योग्य.
मांसाशिन्—मांसखानेवाला.
निर्दय—दयासे रहित.
दग्ध—जलाहुआ, जलीहुई.
उप्तबीज—बोयाहुआ बीज.
अंकुरसमर्थता—अंकुर पैदा करनेमें सामर्थ्य.
दीपनाश—दीपकका बुझाना.
तमोराशि—अंधकारका समूह.
आह्वान—बुलावा, निमन्त्रण.

अपेक्षते—(वो) चाहता-ती-है.
समीहितार्थ—मनवांछित कार्य.
संसिद्धि—तैयारी.
तुष्यति—(वो) खुश होता-ती-है.
अनभोक्तव्यं—भोगना, भोगनेयोग्य.
कृत—कियाहुआ.
सौभ्रात्र—अच्छा भायपन.
दुरासद—दुर्लभ.
भाग्य—दैव.
जाग्रत्—जागता.
आत्मीय—अपना.
अपाय—नाश.
शङ्का—वहम, सन्देह.
शङ्कु—खीला, कील.
प्राणभृत्—प्राणी.
हृत्—हृदय, कलेजा.
प्रदीप—दीप, दीपक.
दीपित—प्रकाशित कियाहुआ.
देश—जगह.
तमस्—अंधकार.

गति—गमन.
पुष्पावचय—फूलोंका वीनना.
शक्य—सके, योग्य, सकाय ऐसा.
फलकाल—फल लगनेका समय.
समागत—आयाहुआ.
आस्था—आशा.
सत्—सज्जन.
यशःकाय—कीर्तिरूपी शरीर.
अस्थायिशरीरक—क्षणभंगुरदेह.
जीवित—जीवन.
पराधीन—परायेके वश.
जीव—प्राणी.
मरण—मरना.
वरं—अच्छा.
अप्रिय—कुप्यारा.
पथ्य—हितावह, परहेज.
वक्तृ—बोलनेवाला-ली.
श्रोतृ—सुननेवाला-ली.
दुर्लभ—दुष्प्राप्य.

द्वादशः पाठः १२.

मुद्रणालयोपदेशः ।

संस्कृतवाक्यानि-	प्राकृतवाक्यानि-
अस्मिन्मुम्बय्याख्ये नगरे मुद्रणालयःअस्ति	इस मुंबईनामकनगरमें छापाखाना है.
अस्य नाम "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) मुद्रणालयइति	इसका "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्-प्रेस) (छापखाना) ऐसा नाम है.
अस्य मुद्रणालयस्य क्षेमराजनामा श्रेष्ठी अधिपतिः अस्ति	इस छापाखानेका खेमराज नामक सेठ मालिक है.
अस्मिन् मुद्रणालये बहूनि पुस्तकानि मुद्रितानि संति	इस छापाखानामें बहुत पुस्तकें छपी हैं.
बहूनि च पुस्तकानि विक्रय्याणि संति	बहुत पुस्तक बिकनेको तैय्यार हैं.
एषां च सर्वेषां पुस्तकानां मूल्यम् अतीवोचितं वर्तते	इन सब पुस्तकोंकी कीमत बहुतही योग्य रक्खी हुई है.
हेमित्र ! यदि कस्यापि पुस्तकस्य अपेक्षा चेत् श्रीवेङ्कटेश्वर मुद्रणालये पत्रं प्रेषय	हे मित्र ! जो किसीभी पुस्तककी चाहना हो तो "श्रीवेंकटेश्वर" छापाखानामें पत्र(चिट्ठी)भेज.
मूल्यमपि पोस्टद्वारा प्रेषय	पुस्तककी कीमतभी पोष्टमार्फत भेज.
तेन शीघ्रमेव पुस्तकानि अत्र आयास्यंति	तिस करके जल्दीही पुस्तक यहां आवेंगी.
कथमपि विलंबो न भविष्यति	कैसाभी विलंब न होगा.
काव्यग्रंथाः पुराणग्रंथाश्च बहवः संति	काव्योंकी पुस्तकें और पुराणोंकी पुस्तकें बहुत हैं.

भाषाग्रंथा अपि विपुला विद्यंते	भाषाके बने हुए ग्रन्थभी बहुत हैं.
चंपूनाटकग्रन्थाश्च स्वल्पमूल्येनैव मिलंति	चम्पूकाव्योंकी पुस्तकें और नाटकोंकी पुस्तकें थोडेही कीमतसे मिलतीहैं.
मूलसंस्कृतग्रन्थानां भाषांतराणि कृत्वा अत्र मुद्रितानि संति	मूलसंस्कृतपुस्तकोंका(हिंदी) भाषांतर करके यहां छपेहैं.
येषांयेषां ग्राहकाणां यस्ययस्य ग्रन्थस्य अपेक्षा विद्यते तैस्तैर्मूल्यव्यवस्थापूर्वकपत्रद्वारा सूचनायां कृतायां तानितानि पुस्तकानि अविलम्बितं प्रेषयिष्यंते	जिनजिनग्राहकोंको जिसजिस पुस्तककी चाहना होवे,तिन्हों ने कीमत भेजने वगैरहकी व्यवस्था करके चिठीद्वारा सूचना कीजाय तो पुस्तकें शीघ्र भेजीजाँयगी.
अस्मिन्मुद्रणालये च शास्त्रिणः पुस्तकानि शोधयंति	इस छापाखानामें शास्त्र पढे हुए लोक ग्रन्थ शोधन करतेहैं.
अक्षरसंयोजकाश्च कीलाक्षराणि संयोजयंति	अक्षर जोडनेवाले (कंपोजीटर) लोक अक्षर (टैप) जोडतेहैं.
बाष्प मुद्रणयंत्रेषु पत्रसंचायिकाःमुद्रियंते	छापनेके यंत्र मशीन(स्टीम्-प्रेस) में फॉर्म छापेजाते हैं.
मुद्रणयंत्रे मषी सिद्धैवानीयते.	छपनेके प्रेसमें स्याही तैय्यारही लाई जातीहै.
चित्रविचित्रवर्णापि मषी भवति	रंग बरंगकीभी स्याही होतीहै.
एकस्मिन् यन्त्रे सुवर्णमुद्राक्षराणि मुद्रियंते	एक प्रेसमें सोनेके अक्षर छपाया करतेहैं.

पश्यैतत्सुवर्णमुद्राक्षरांकितं पुस्तकं कथं सुंदरं दृश्यते	देख यह सोनेके अक्षरसे छपाहुआ पुस्तक कैसा सुंदर दीखता है.
अन्ये च पुस्तकबन्धकाः पुस्तकानि बध्नंति	दूसरे पुस्तक बाँधनेवाले (बुकबाँइंडर्) लोक पुस्तक बांधते हैं.
बहूनि च कीलाक्षरनिर्माणयंत्राणि विद्यंते	बहुत टाईप् बनानेके मशीनें हैं.
एषु कीलाक्षरनिर्माणयंत्रेषु प्रतिदिनं बहूनि अक्षराणि निष्पद्यंते	इन टाईप् बनानेके मशीनोंमें दररोज बहुत अक्षर पैदा होते हैं.
इयं हि अक्षरावचयशाला	यह अक्षर (टैप्) जोडनेकी जगह (कंपोजीटर खाता) है.
तस्याम् अक्षरावचयशालायां बहवो भृत्याः अक्षराणि ग्रंथरूपेण अवचिन्वंति	उस कंपोजीटरखातामें बहुतसे नौकरलोक टाइपोंको पुस्तकके रूपसे इकट्ठा(कंपोज्)करतेहैं.
इत्येवमादीनि बहूनि कार्याणि मुद्रणालयेस्मिन् भवंति	इत्यादिक बहुत काम इस छापाखानामें होतेहैं.
एतन्मुद्रणालयस्य पुस्तकालयः अतिमहान् वर्तते	इस छापाखानेका पुस्तकालय (बुकडिपो) बहुत बडा है.
किं विशेषोल्लेखनेन	ज्यादा लिखनेसे क्या है.
अस्मात् पुस्तकालयात् येषां पुस्तकापेक्षास्ति तेषाम् अपेक्षितानि सर्वाणि पुस्तकानि उचितमूल्येनैव मिलंति	इस पुस्तकालयसे जिनको पुस्तकोंकी इच्छा हो उन्होंको सब पुस्तकें योग्य मूल्यसेही मिलती हैं.

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर"मुद्रणालयः मुंबई इति नाम्ना पत्रव्यवहारः कर्तव्यः	खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना–मुंबई, इस नामसे पत्रव्यवहार करना.
इति मुद्रणालयोपदेशः	इसरीतसेछापाखानेका उपदेशहुआ.

शब्दकोश १२.

मोहमयी–मुंबई. (बंबई.)
नगर–शहर.
मुद्रणालय–छापाखाना.
श्रीवेङ्कटेश्वरमुद्रणालय–"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापखाना.
क्षेमराजनामन्–खेमराज नामवाला.
श्रेष्ठिन्–सेठ.
अधिपति–मालिक.
पुस्तक–ग्रंथ.
मुद्रित–छपाहुआ.
विक्रय्य–बिकनेको तैयार.
मूल्य–कीमत.
अतीवोचित–बहुतहीयोग्य.
अपेक्षा–चाहना-इच्छा.
पत्र–चिठी.
प्रेषय–(तू) भेज.
शीघ्रमेव–जल्दीहा.
आयास्यंति–(वे) आवेंगे.
कथमपि–कैसा भी.
विलंब–देर.
भविष्यति–होगा.
काव्यग्रंथ–काव्योंकी पुस्तकें.
पुराणग्रंथ–पुराणोंकी पुस्तकें.
भाषाग्रंथ–हिंदी भाषाकी पुस्तकें.
विपुल–बहुत.
विद्यंते–(वे) मौजूद हैं.
चंपूनाटकग्रंथ–चंपूकाव्य और नाटकोंकी पुस्तकें.
मूलसंस्कृतग्रंथ–जिनमें मूल संस्कृत भाषाहै; ऐसी पुस्तकें.
भाषांतर–दूसरी भाषा (हिंदीभाषामें उल्था).
अत्र–यहां.

ग्राहक—खरीद करनेवाला.
पत्रद्वार—चिठ्ठीके मार्फत.
अविलंबित—शीघ्र.
प्रेषयिष्यंते—(वे) भेजे जाँयगे.
शास्त्रिन्—शास्त्र पढाहुआ.
पुस्तक—ग्रंथ.
शोधयंति—(वे) शोधन (शुद्ध) करतेहैं.
अक्षरसंयोजक—अक्षरोंको जोडनेवाला (कंपोजीटर.)
कीलाक्षर—खीलोंका अक्षर (टैप्.)
संयोजयंति—(वे) जोडते हैं.
पत्रसंचायिका—फॉर्म.
मुद्रियंते—(वे) छपेजातेहैं.
मषी—स्याही.
सिद्ध—तैय्यार.
आनीयते—(वो) लाया-ई-जाता-ती-है.
चित्रविचित्रवर्णा—रंग बिरंग वर्णकी.
सुवर्णमुद्राक्षर—सोनेके अक्षर.

कथं—कैसा ?
सुंदर—अच्छा.
दृश्यते—(वो) दीखता-ती-है.
कीलाक्षरनिर्माणयंत्र—टैप् तैयार करनेका यंत्र(फाउंडरी मशीन्)
अक्षर—टैप्.
निष्पद्यन्ते—(वो) नवीन तैयार होते हैं.
अक्षरावचयशाला—अक्षर जोडनेका खाता(कंपोजीटर खाता.)
भृत्य—नौकर-चाकर.
ग्रंथरूप—पुस्तकका आकार.
अवाचिन्वंति—(वे) इकठा करतेहैं. जोडतेहैं-वीनतेहैं.
एवमादि—इत्यादि.
पुस्तकालय—पुस्तकबेंचनेका दूकान (बुक्डिपो).
अतिमहत्—बहुत मोटा.
वर्तते—(वो) है.
विशेषोल्लेखन—ज्यादा लिखना.
उचितमूल्य—योग्य कीमत.

त्रयोदशः पाठः १३.

पुस्तकोपदेशः ।

संस्कृतवाक्यानि-	प्राकृतवाक्यानि-
इदं पुस्तकं गोविंदशास्त्रिणा विरचितम्	यह पुस्तक गोविंदशास्त्रीने रचा है.
तदिदं क्षेमराजश्रेष्ठिना स्वाधिकारेण स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणालये मुद्रितम्	वो यह खेमराजसेठने अपने अधिकारसे निज "श्रीवेंकटेश्वर" छापाखानामें छपाया.
अनेन गोविन्दशास्त्रिणा अन्यानि अपि पुस्तकानि निर्मितानि संति तानि मुद्रितानि संति	इस गोविंदशास्त्रीने दूसरे भी पुस्तकें निर्माण किये हैं; वे छपे हैं.
अयं गोविन्दशास्त्री शिशून्संस्कृतं पाठयति; संस्कृतानि पुस्तकानि च शोधयति	यह गोविंद शास्त्री बालकोंको संस्कृत पढाताहै; संस्कृतभाषाके पुस्तकोंकोभी शुद्ध करता है.
संप्रति अनेन हिन्दीभापया तर्कसंग्रहव्याख्या निरमायि; लघुकौमुदीव्याख्या च तयैव भापया निर्मीयते	हालमें इसने हिन्दीभाषासे तर्कसंग्रह नामक ग्रन्थकी टीका बनाई है लघुकौमुदीनामक व्याकरण ग्रन्थकी टीका उसी (हिन्दी) भाषामें निर्माण की जाती है.
अन्यानि च त्रिचतुराणि पुस्तकानि संप्रति महाराष्ट्रभापया व्याख्याय विलिखति	दूसरेभी तीन चार पुस्तक मराठी भाषासे व्याख्यान करके लिखता है.

अस्य ग्रंथस्य पश्चात् द्वितीय-भागोपि मुद्रयिष्यते	इस (बालसंस्कृतबोधिनी) ग्रंथ का पीछे दूसरा भागभी छपाया जायगा.
येन साधारणसंस्कृतज्ञाः अधिकज्ञानलाभे अधिकारिणो भवंति	जिस करके साधारण संस्कृत जाननेवाले लोक अधिक ज्ञानप्राप्तीमें अधिकारी होते हैं.
तदपि पुस्तकं स्वल्पीयसैव समयेन मुद्रयित्वा प्रकाशयिष्यते	वोभी पुस्तक (दूसरा भाग) बहुतही थोडे समयसे छपके प्रसिद्ध कियाजायगा.
किं मित्र ! तुभ्यं रोचते वा इदं पुस्तकं ? यदि रोचते तर्हि वाचय; अन्यानपि वाचयितुं कथय	क्यों मित्र ! क्या तेरेको यह पुस्तक अच्छा लगता है ? जो तेरेको अच्छा लगता होय तो बाँच और दूसरोंकोभी बाँचनेको कह.
इदं बालसंस्कृतबोधिनीपुस्तकं बालानां संस्कृतबोधकं भविष्यति; इति प्रायो बहूनां विदुषां मतं तेषां मुखेभ्यः श्रूयते	यह बालसंस्कृतबोधिनीनामक पुस्तक बालकोंको (जिन्होंने[1] संस्कृत पढा नहीं उन्होंको) संस्कृतभाषा समझानेवाला होगा, इस प्रकारसे बहुत विद्वान् लोकोंका मत उनके मुखोंसे सुना जाता है.
इत्येष पुस्तकोपदेशः संपूर्णः	इसप्रकारसे पुस्तकका उपदेश सम्पूर्ण हुवा.

१ जिन्होंने यह बालसंस्कृतबोधिनीग्रंथ पढा है.

शब्दकोश १२.

गोविन्दशास्त्रिन्—गोविंदनामक शास्त्री.
अन्य—दूसरा- री.
अपि— भी.
निर्मित—रचाहुआ- ई.
महाराष्ट्रभाषा - मरहटी भाषा.
मुद्रितानि—छपेहुए.
सम्प्रति—सांप्रत, हालमें.
शिशु—बालक.
संस्कृत—संस्कृतभाषा.
पाठयति—(वो) पढाता-ती-है.
शोधयति— (वो)शुद्धकरता-ती-है.
हिन्दीभाषा— हिंदुस्थानी भाषा.
तर्कसंग्रहव्याख्या—तर्कसंग्रह नामक ग्रंथकी भाषाटीका.
निरमायि—निर्माणकरी.
लघुकौमुदीव्याख्या— लघुकौमुदीनामक ग्रंथकी भाषाटीका.
निर्मीयते—बनाई जाती है.
त्रिचतुराणि—तीन चार.
व्याख्याय—भाषाटीका करके.
विलिखति—(वो)-लिखता-ती-है.

द्वितीयभाग—दूसरा भाग.
मुद्रयिष्यते—(वो)—छपाजायगा-गी.
साधारणसंस्कृतज्ञ—कुछ थोडा संस्कृत जाननेवाला.
अधिकज्ञानलाभ—ज्यादा ज्ञानका मिलना.
अधिकारिन्—जिसको अधिकार है ऐसा, समर्थ
तदपि—वोभी, [अव्यय होवे तब 'तौभी' ऐसाभी अर्थ होताहै.]
स्वल्पीयस्—बहुत थोडा.
समय—काल.
मुद्रयित्वा—छपकरके.
प्रकाशयिष्यते—प्रसिद्ध किया जायगा-गी.
वा—क्या ?
तर्हि—तौ.
वाचय—(तू) बाच.
कथय—(तू) कह.

बालसंस्कृतबोधिनीपुस्तक—बालसंस्कृतबोधिनीनामक ग्रन्थ.

बालक—बच्चा, संस्कृत नहीं पढा हुआ.

संस्कृतबोधक—संस्कृतभाषाको समझानेवाला.

प्रायः—बहुत करके.

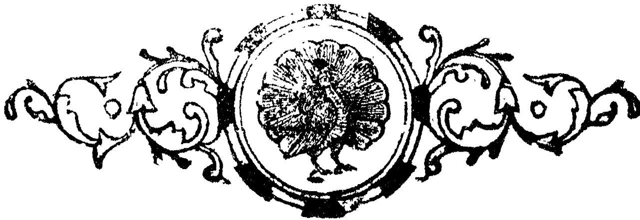
विदुस्—विद्वान्.

मुख—मुँह.

श्रूयते—(वो) सुना जाता-ती-है.

सम्पूर्ण—पूराहुआ.

इति बालसंस्कृतबोधिनी समाप्त.



पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर"(स्टीम्) यन्त्रालय—(मुंबई)

क्रय्यपुस्तक व्याकरणग्रंथाः ।

नाम	किं० रु० आ०
सिद्धांतकौमुदी अतिउत्तम पंचपाठीसहित	२—०
अष्टाध्यायी, गणपाठ, धातुपाठ, लिंगानुशा०	०—१२
लघुसिद्धांतकौमुदीटिप्पणीसहितजिल्द मोटा अक्षर ...	०—१२
लघुसिद्धांतकौमुदी टिप्पणस० ग्लेज छोटा अक्षर	०—४
कारकस्वरूप भाषाटीका सहित [व्याकरण]	०—६
सिद्धांतकौमुदी तत्त्वबोधिनीटीकासहित संपूर्ण	६—०
सिद्धांतचंद्रिका सटीक उत्तरार्द्ध सुबोधिनी और तत्त्वदीपिकासह	२—०
सिद्धांतचंद्रिका सटीक पूर्वार्द्ध सुबोधिनी और तत्त्वदीपिका टीका सहित...	२—०
सिद्धांतचंद्रिका मूल	०—१०
सिद्धांतकौमुदी तत्त्वबोधिनी टीकासहित उत्तरार्द्ध छपके तयार है	४—०
रूपमाला संधिभागः अव्ययार्थभागः प्रयोगविधि संग्रहः (कारकसमासताद्धितदिक)क्रियाकलापः आख्यातचन्द्रिका धातुरूपभेदः श्लोकयोजनिकोपायः	१—४
रूपमालाव्याकरणका षड्लिंगविभाग	०—६
" संधिविभागः	०—५
" अव्ययविभागः	०—३
प्रयोगविधिः	०—२
शब्दरूपावली एकाक्षरीकोष सहित...	०—१॥
धातुरूपावली लघुधातुपाठ सहित	०—३
समासचक्र.	०—१

संपूर्ण पुस्तकोंका (बडा सूचीपत्र अलगहै) ॥ आध आनेका टिकट भेजकर मुफ्त मँगालीजिये ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना—मुंबई.